

शाश्वत सुख का मार्गदर्शक मासिकपत्र

आत्मधर्म

卐 : संपादक : रामजी माणेकचंद दोशी वकील 卐

अगस्त : १९५९

☆ वर्ष पन्द्रहवाँ, श्रावण, वीर नि०सं० २४८५ ☆

अंक : ४

संयोग तो संयोग ही है

एकबार एक अकेला निर्धन व्यक्ति बम्बई गया। वहाँ जाकर उसने व्यापार शुरू किया और धीरे-धीरे लाखों रुपये कमा लिये। फिर अपना विवाह किया, संतान हुई। लड़कों का भी विवाह कर दिया... परिवार में कुल बारह आदमी हो गये; मकान बन गये... लेकिन कुछ वर्षों में एक के बाद एक सब मर गये, मकान ले गये, सम्पत्ति नष्ट हो गई, और भाई साहब ज्यों के त्यों अकेले लौट आये...! देखो यह संयोग! इन्द्रपद या चक्रवर्ती पद के संयोग की भी यही स्थिति है; इसलिये हे जीव! संयोग में से सुख प्राप्ति की आशा छोड़कर अपने निजस्वभाव की भावना कर! आत्मस्वभाव में सुख है और उस स्वभाव की भावना से प्रगट हुआ सुख सदैव आत्मा के साथ ही रहता है; किन्हीं भी संयोगों में उस सुख का वियोग नहीं होता। संयोग में माना हुआ सुख उस संयोग के वियोग में स्थिर नहीं रह सकता, किन्तु नित्य चित् स्वभाव में से आया हुआ सुख, संयोग के बिना भी सदैव बना रहता है।

[—पूज्य गुरुदेव]

वार्षिक मूल्य
तीन रुपया

[१७२]

एक अंक
चार आना

श्री दि० जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, सोनगढ़ (सौराष्ट्र)



सस्ते में मिलेगा
श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव कृत
पंचास्तिकाय संग्रह
यानी
पंचास्तिकाय शास्त्र

इसका अक्षरशः ठीक रूप में अनुवाद प्रथम बार ही हुआ है। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों को एकत्र करके पाँच साल तक उत्तम परिश्रम द्वारा-आचार्यवर श्री अमृतचन्द्र की टीका का अक्षरशः अनुवाद तैयार हुआ है, जो सर्व प्रकार उत्तम और संशोधित व संस्कृत टीका सहित है, टीका के नीचे कठिन विषयों पर अच्छा प्रकाश डालनेवाला विस्तृत फुटनोट भी दिया है, बढ़िया कागज सुन्दर छपाई और मजबूत सुन्दर बाइंडिंग सहित सर्व प्रकार से मनोज्ञ और महान ग्रंथ होने पर भी मूल्य ४-५० है। पोस्टेजादि अलग (पृ० सं० ३१५) थोक लेने पर कमीशन २५) से० देंगे।

मिलने का पता—

श्री दि० जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट

सोनगढ़ (सौराष्ट्र)

[जैन-जैनेतर समाज में अवश्य प्रचार में लाने योग्य यह उत्तम साहित्य है।]





आत्मधर्म



: संपादक : रामजी माणेकचंद दोशी वकील



अगस्त : १९५९



वर्ष पन्द्रहवाँ, श्रावण, वीर नि०सं० २४८५



अंक : ४

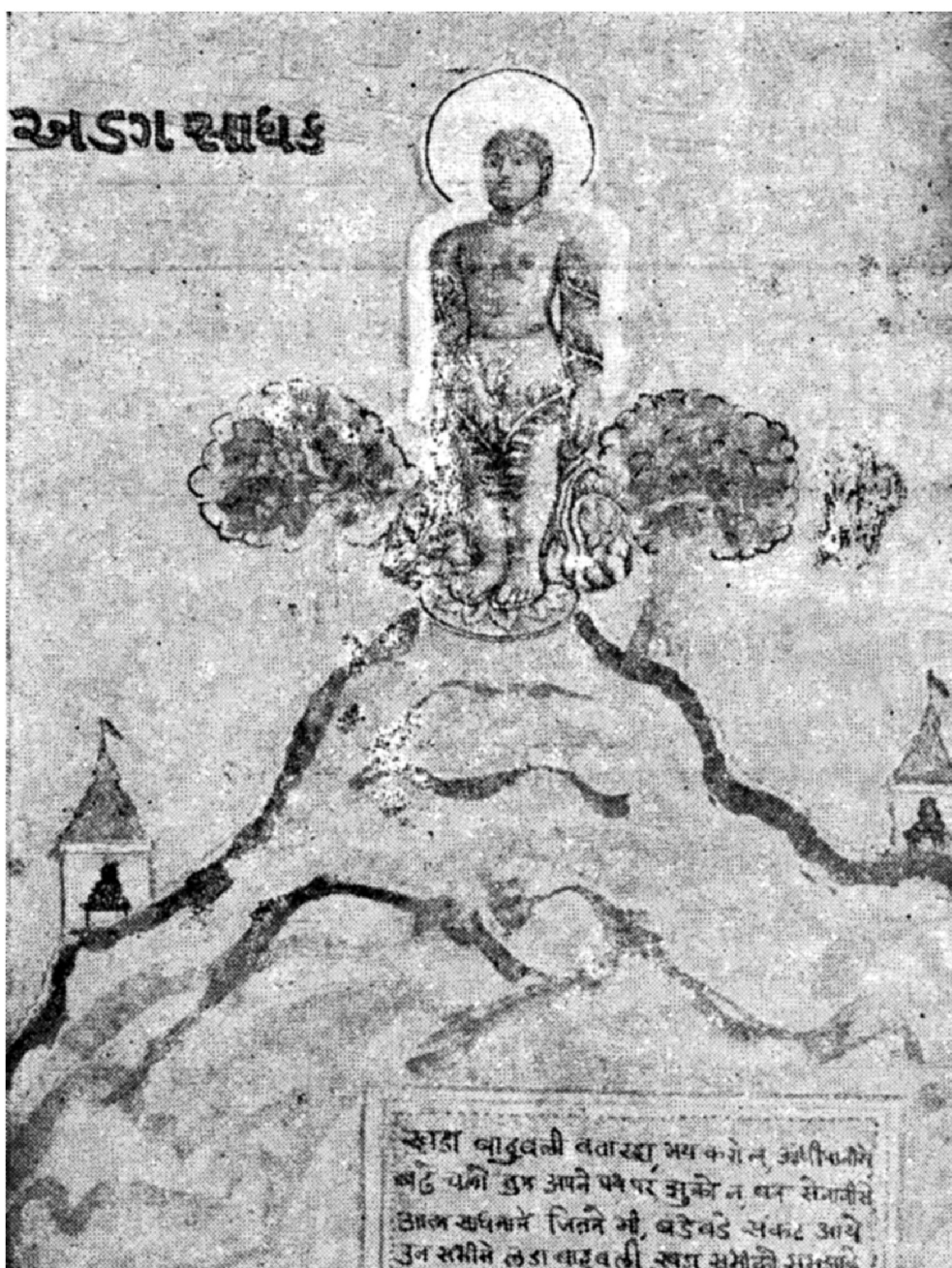
सुख

- तुम्हें सुख चाहिये ?
हाँ।
- स्थायी सुख की आवश्यकता है या क्षणिक की ?
स्थायी सुख चाहिये।
- ठीक है; जानते हो वह सुख कैसे प्राप्त होता है ?
नहीं।
- तो सुख के कारण को जाने बिना उसकी प्राप्ति कहाँ से होगी ?
नहीं हो सकती।
- इसलिये, यदि सुखी होने की इच्छा हो तो सुख का कारण जानना चाहिये ?
प्रभो ! सुख का कारण क्या है ?
- हे जिज्ञासु सुन ! सुख आत्मा में है; इसलिये आत्मा को जानकर उसमें एकाग्र होना ही सुख का कारण है।

[— प्रवचन से]



यात्रा का अमर झरना



हे परम वैरागी, अडिग साधक, उत्कृष्ट आत्मध्यानी बाहुबलि नाथ ! कहान गुरुदेव के साथ आपकी परम वैरागी ध्यान मुद्रा के दर्शन करने से आपकी परम आत्मसाधना हमारे हृदय में अंकित हो गई है.... कहान-गुरुदेव के साथ हुई आपकी यह महा 'मंगल वर्द्धिनी' यात्रा सर्व यात्रियों के जीवन में आत्महित की प्रेरणा का एक अमर झरना बन जायेगी.... जीवन के क्षण-क्षण में आपकी पावन ध्यान मुद्रा के स्मरण मात्र से यात्रा का वह अमर झरना हमें शांति देकर संसार के ताप से बचायेगा और आप जैसा मोक्ष सुख प्राप्त करायेगा ।

प्रभो ! आपकी परम ध्यान मुद्रा मौन होने पर भी मानों आपके आत्म प्रदेशों में से ध्वनि उठ रही है कि—

“मुझे लगत संसार असार.... यह रे संसार में,
नहिं जाऊं... नहिं जाऊं, नहिं.... जाऊं रे....
मुझे ज्ञायक भाव का प्यार, यह रे, ज्ञायक में
लीन होऊं.... लीन होऊं.... लीन होऊं रे.....”

यात्रा समाचार

श्रवणबेलगोला में

बाहुबलि भगवान की दूसरी यात्रा और अभिषेक

फाल्गुन कृष्ण ११, ता० ५-३-५९ के प्रातःकाल गुरुदेव पुनः संघ सहित इन्द्रगिरि (विन्ध्यगिरि) पर्वत पर पधारे। आज गुरुदेव ने भावपूर्वक बाहुबलि भगवान के चरणों का अभिषेक किया था। अभिषेक तथा रथयात्रा सम्बन्धी बोलियों में करीब १० हजार रुपये एकत्रित हुए थे, जिनका उपयोग उस पर्वत पर यात्रा के स्मरणार्थ किया जायेगा। अभिषेक के पश्चात् गुरुदेव ने चारों ओर से पुनः पुनः बाहुबलिनाथ को निहारा.... ऐसा लग रहा था मानों भगवान को देखते ही रहें..... 'निरखते तृप्ति न होय !' अभिषेक के पश्चात् अपार भक्ति हुई—और इसप्रकार बाहुबलि भगवान की दूसरी यात्रा करके भक्तजन गुरुदेव के साथ उल्लासपूर्वक भक्ति करते-करते नीचे उतरे....

दोपहर को प्रवचन में 'भेदज्ञान के निमित्तों की दुर्लभता' पर बोलते हुए गुरुदेव ने कहा था—देखो, यह निरावरण शांत-वीतरागी बाहुबलि भगवान इस जगत में अद्वितीय हैं; वे भेदज्ञान के निमित्त हैं; चैतन्यशक्ति को प्रगट करके खड़े हुए यह बाहुबलि भगवान साक्षात् चैतन्य को दिखला रहे हैं। व्याख्यान के पश्चात् दक्षिणी बहिनों ने रासनृत्यपूर्वक भक्ति की थी। सायंकाल भोजन के बाद यात्री मैसूर की ओर रवाना हुए।



सर्च लाइट में बाहुबलि-दर्शन (तीसरी यात्रा)

संध्या होते ही पूज्य गुरुदेव शेष यात्रियों-सहित सर्च लाइट में बाहुबलि के दर्शनार्थ पुनः इन्द्रगिरि पर पधारे। गुरुदेव ने अत्यन्त भक्तिभावपूर्वक शांतचित्त से दर्शन किये। शांत निस्तब्ध वातावरण में जगमगाती हुई उस वीर-वीतरागी संत मुद्रा को देखकर सब आनन्द मग्न हो गये और बेन श्रीबेन ने—

“प्यारा बाहुबलिदेव... जिनने वंदुं वार हजार.....

नाथने वंदुं वार हजार.....”

—उल्लासपूर्वक यह भक्ति कराई। और पर्वत से नीचे उतरते ही श्रवणबेलगोला की जानता ने उमंगपूर्वक गुरुदेव का स्वागत किया। स्वागत करते हुए लोग कह रहे थे—“जिसप्रकार बाहुबलि भगवान को देखकर आप आनन्दित हो रहे हैं, उसीप्रकार हमें कानजी स्वामी को देखकर अत्यन्त हर्ष हुआ है।”—इसप्रकार अतिशय आनन्दोल्लास के वातावरण में भक्तिपूर्वक बाहुबलि भगवान की वन्दना करके गुरुदेव ने दूसरे दिन श्रवणबेलगोला से मैसूर की ओर प्रस्थान किया।

❀ भारत के सर्वोन्नत भगवान बाहुबलि स्वामी को नमस्कार हो !

❀ बाहुबलि भगवान के दर्शन करानेवाले कहान गुरुदेव को नमस्कार हो !

मैसूर शहर—

फाल्गुन कृष्ण १२ ता. ६-३-५९ के दिन मैसूर पधारते ही भक्तों ने गुरुदेव का भावभीना स्वागत किया..... स्वागत-समारोह में चार हाथी थे। मैसूर एक सुन्दर शहर है; वहाँ दो जिनमन्दिरों के अतिरिक्त अन्य दर्शनीय स्थान हैं। यात्री दूसरे दिन मैसूर से दसैक मील दूर श्री रंगपट्टम में २४ तीर्थकरों के दर्शन को गये। सायंकाल गुरुदेव आदि मैसूर से पच्चीस मील दूर गोम्मटगिरि के दर्शनार्थ गये और वहाँ १५ फुट ऊँची श्यामरंगी बाहुबलि भगवान की प्रतिमा के दर्शन-पूजन किये। मोटर बस-यात्री भी गोम्मटगिरि के दर्शनार्थ जा रहे थे, किन्तु मार्ग में एक मोटर बस बिगड़ जाने से सारी बसों को लौटना पड़ा था।

बेंगलोर सिटी—

फाल्गुन कृष्ण १४ ता. ८-३-५९ के दिन संघ सहित बेंगलोर पहुँचते ही वहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने गुरुदेव का भव्य स्वागत किया था। बेंगलोर भारत का एक औद्योगिक नगर है; वहाँ

एक जिनमन्दिर है, जिसमें भगवान महावीर की सुन्दर धातुमयी खड्गासन प्रतिमा है। वहाँ संघ के भोजनादि की व्यवस्था गुजराती समाज की ओर से की गई थी। दूसरे दिन टाउन हॉल में प्रवचन का दृश्य सुन्दर था। प्रवचन से पूर्व प्रोफेसर एस. के. धर्मेन्द्रैया एम.ए.बी.टी. ने इंग्लिश में स्वागत-प्रवचन करते हुए गुरुदेव का जीवन-परिचय दिया और कहा—हमारे लिये यह एक सुनहरा अवसर है कि पूज्य कानजी स्वामी यहाँ सात सौ व्यक्तियों के विशाल संघ सहित पधारे हैं। बेंगलोर की जनता की ओर से मैं उनका स्वागत करता हूँ। दूसरे सज्जन ने इंग्लिश भाषण द्वारा अभिनन्दन करते हुए कहा—हमारा सौभाग्य है कि श्री कानजी स्वामी इतनी दूर से संघ सहित यहाँ पधारे हैं। ढाई हजार वर्ष पहले भगवान महावीर ने जो दिव्य सन्देश दिया था, वही वे आज हमें सुना रहे हैं। हम सबकी ओर से मैं स्वामीजी का अभिनन्दन करता हूँ। गुजराती समाज की ओर से स्वागत करते हुए एक भाई ने कहा था—हमारे लिये बड़े आनन्द का दिन है कि पूज्य गुरुदेव दो दिन के लिये यहाँ पधारे हैं। बेंगलोर गुजराती समाज की ओर से मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ और आभार मानता हूँ। गुरुदेव के प्रवचन में शहर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे... और प्रवचन की हिन्दी या गुजराती कोई भाषा न समझने पर भी गुरुदेव की प्रभावशाली मुद्रा तथा समझाने की भावपूर्ण चेष्टा को देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए थे। बेंगलोर में हवाई जहाज, टेलीफोन आदि के बड़े-बड़े कारखाने हैं।

बेंगलोर में दो दिन का कार्यक्रम समाप्त करके फाल्गुन शुक्ला १, ता. १०-३-५९ के प्रातःकाल संघ ने वहाँ से प्रस्थान किया... और मार्ग में कांजीवरम् शहर के निकट बारह सौ वर्ष प्राचीन जिनमन्दिर के दर्शन किये। पूज्य गुरुदेव ने रात्रि को वहीं विश्राम किया और संघ रात को मद्रास पहुँच गया।

पुंडी नगरी—

बेंगलोर से मद्रास जाते समय पूज्य गुरुदेव ने मार्ग में पुंडी नगर जिनमन्दिर के दर्शन किये थे। वहाँ भगवान पार्श्वनाथ की ६ फुट ऊँची खड्गासन प्रतिमा, आदिनाथ भगवान एवं अन्य प्राचीन मूर्तियाँ हैं। एक नवीन मानस्तंभ का निर्माण भी हुआ है। वहाँ आधे घंटे तक गुरुदेव का व्याख्यान हुआ था। बाहर से तीन-चार सौ स्त्री-पुरुष गुरुदेव के दर्शनार्थ आये थे।

मद्रास शहर—

फाल्गुन शुक्ला २, ता. ११-३-५९ के दिन गुरुदेव मद्रास पधारे और दिगम्बर जैन समाज

तथा गुजराती समाज की ओर से भव्य स्वागत हुआ.... स्वागत-जुलूस के आगे एक सुन्दर सजा हुआ हाथी चल रहा था.... नगर में घूमने के बाद जुलूस सेन्ट मेरी हॉल पहुँचा, जहाँ प्रवचन के लिये सुन्दर कला पूर्ण मंच तैयार किया गया था। करीब ४००० जनसमुदाय के बीच गुरुदेव ने मंगल-प्रवचन किया। मद्रास के समाज ने संघ के ठहरने तथा भोजनादि की सुन्दर व्यवस्था की थी। प्रातःकाल तथा दोपहर के प्रवचन में करीब दो हजार स्त्री-पुरुष एकत्रित होते थे। आज (फाल्गुन शुक्ला २) सोनगढ़ में सीमंधर-स्वामी की प्रतिष्ठा का मंगल-दिवस होने के कारण रात्रि को जिनमन्दिर में पूज्य बेन श्रीबेन ने भावपूर्ण भक्ति कराई थी। फाल्गुन शुक्ला ३ के दिन मद्रास एसेम्बली के स्पीकर ने गुरुदेव का स्वागत करते हुए अंग्रेजी में भावपूर्ण भाषण दिया। जिसमें गुरुदेव की प्रवचन शैली की प्रशंसा की थी। पं० भरत चक्रवर्ती पूज्य गुरुदेव के प्रवचन का तामिल भाषा में अनुवाद करके संक्षिप्त सार समझाते थे। फाल्गुन शुक्ला ४ के दिन मद्रास दिगम्बर जैन समाज की ओर से पूज्य गुरुदेव को एक अभिनन्दन-पत्र दिया गया था जो पं० मल्लिनाथ शास्त्री ने पढ़ा था और सेठ कन्हैयालाल जैन के हाथ से अर्पण किया गया था।

वांदेवास—

फाल्गुन शुक्ला ५ के दिन कांजीवरम् होकर पोन्नूर की यात्रा के लिये जाते समय मार्ग में वांदेवास नगर आता है, जहाँ लगभग २००० स्त्री-पुरुष गुरुदेव के दर्शनार्थ एकत्रित हुए थे और गुरुदेव को तीन अभिनन्दन-पत्र अर्पण किये थे। अनजान प्रदेश, अपरिचित व्यक्ति, अजान भाषा होने पर भी गुरुदेव जहाँ-जहाँ गये, वहाँ हजारों लोगों ने उत्साहपूर्वक उनका सन्मान किया और महान प्रभाव देखकर प्रसन्न हुए। यहाँ पर भी पं० जी गुरुदेव के प्रवचन को तामिल भाषा में अनुवाद करके सभा को समझाते थे।

कुन्दकुन्द स्वामी की पवित्र तपोभूमि—

पोन्नूर धाम की उल्लासभरी यात्रा

सवेरे ९ बजे पूज्य गुरुदेव तथा यात्रा संघ पोन्नूर पहुँच गया था। वहाँ एक सुन्दर शोभायमान छोटा-सा पर्वत है... उसी पहाड़ पर कुन्दकुन्दाचार्यदेव की तपोभूमि है। कहते हैं कि वहीं वे ध्यान करते थे और वहीं से विदेहक्षेत्र गये थे तथा वहीं परमागमों की रचना की थी। कुन्दकुन्द प्रभु की उस पावन भूमि पर पहुँचने से गुरुदेव तथा यात्रासंघ को अपार हर्ष हो रहा था... वह पोन्नूर धाम अनेक चम्पा के वृक्षों से शोभायमान हो रहा था... 'पोन्नूर' का अर्थ होता है 'सुवर्ण का पहाड़'; उस

पर कुन्दकुन्दाचार्यदेव की महा मांगलिक चरण पादुका हैं; कुन्दकुन्द प्रभु के पवित्र चरणों के प्रताप से वह पोन्नूर धाम सुवर्ण-पर्वत की अपेक्षा विशेष शोभायमान लगता है। पूज्य गुरुदेव चलते हुए पहाड़ पर चढ़ गये... पहाड़ पर चढ़ने में करीब १० मिनट लगते हैं। पूज्यबेन श्री बेन भी पहाड़ पर पहुँची और वहाँ का रमणीक दृश्य देखकर प्रसन्न होने लगीं।

गुरुदेव ने बड़े भावपूर्वक उस पावन क्षेत्र का अवलोकन किया। पर्वत पर जहाँ चम्पा के पाँच वृक्ष हैं, वहाँ श्री कुन्दकुन्द स्वामी के चरण कमलों के ऊपर एक चम्पा का वृक्ष है; उस वृक्ष से झरते हुए पुष्प प्राकृतिकरूप से कुन्दकुन्दप्रभु के चरणों पर गिरते हैं, मानों वे चम्पा के पुष्प कुन्दकुन्द स्वामी की जगत्पूज्यता घोषित कर रहे हों!

पहले कुन्दकुन्दाचार्यदेव की उत्साहसहित समूह-पूजा हुई और फिर गुरुदेव ने अत्यन्त भक्तिभाव से निम्नोक्त स्तवन गवाया—

ऐवा कुन्दप्रभु अम मंदिरिये....

ऐवा आतम आवो अम मंदिरिये....

जेणे तपोवन तीर्थमां ज्ञान लाघ्यु....

जेणे वन-जंगल मां शास्त्र रच्युं....

ॐकार ध्वनि नुं सत्त्व साध्युं....

—ऐवा कुन्दप्रभु अम मंदिरिये।

जेणे जीवनमां जिनवर चिंतव्या....

जेणे जीवनमां जिनवरने देख्या....

जेणे जीवनमां सीमंधरप्रभु देख्या....

ऐवा कुन्दप्रभु अम मंदिरिये ॥

—इत्यादि भक्ति अति उल्लासपूर्वक हुई थी... गुरुदेव के मुख से कुन्दकुन्दप्रभु की ऐसी सरस भक्ति सुनते हुए बेन श्रीबेन आदि को अत्यन्त हर्ष हो रहा था। कुन्दकुन्दप्रभु के पावन धाम की यात्रा से सबके हृदय अद्भुत भक्ति एवं उल्लास से छलक रहे थे, आनन्द विभोर हो रहे थे।

तत्पश्चात् कुन्दकुन्द प्रभु के पवित्र धाम की महान यात्रा के स्मरणार्थ उनके चरण कमलों पर एक मंडप बनाने के लिये फंड हुआ था, जिसमें करीब चार हजार रुपये एकत्रित हो गये थे। श्री जैन स्वाध्याय मंदिर सोनगढ़ की ओर से भी १५५५) रुपये दिये गये हैं।

तत्पश्चात् गुरुदेव ने अत्यन्त उल्लासपूर्वक अपने परम गुरु भगवान् कुन्दकुन्दस्वामी के पवित्र चरणों का अभिषेक किया था.... बेन श्री बेन ने भी भक्ति-भाव पूर्वक अभिषेक किया था। उस समय ऐसा लग रहा था मानों उन सबके अंतर में भरी हुई भक्ति का प्रवाह ही जलरूप में बाहर आकर कुन्दकुन्द प्रभु के चरणों पर गिर रहा हो!!

अभिषेक के पश्चात् पर्वत पर बनी हुई छोटी-छोटी तीन गुफाओं तथा चम्पा के वृक्षों आदि का अवलोकन करके सब नीचे उतरे.... मार्ग में पूज्य बेन श्री बेन आज की यात्रा का उत्साह एवं हर्ष-उल्लास व्यक्त कर रही थीं—इसप्रकार पोन्नूर में कुन्दकुन्द प्रभु की पवित्र तपोभूमि की यात्रा सानन्द समाप्त हुई। भक्तों के हृदय में उस यात्रा से इतना उल्लास भर गया था मानों कुन्दकुन्द प्रभु के साक्षात् दर्शन हो गये हों!

— परम उपकारी कुन्दकुन्दाचार्य भगवान् को नमस्कार हो!

— कुन्दकुन्द प्रभु की पवित्र तपोभूमि पोन्नूर को नमस्कार हो!

— कुन्दप्रभु के पवित्र धाम की यात्रा करानेवाले कहान गुरुदेव को नमस्कार हो!

यात्रा के पश्चात् पोन्नूर पर्वत की तलहटी में गुरुदेव को अभिनन्दन-पत्र समर्पित किये गये थे... कुन्दकुन्द प्रभु के पवित्र धाम की उल्लास भरी यात्रा से गुरुदेव को विशेष उल्लास आने पर वहाँ श्री जैन स्वाध्याय मन्दिर सोनगढ़ द्वारा दी गई (१५५५) की धनराशि के बदले (५५५५) की घोषणा की गई थी... गुरुदेव के दर्शनार्थ आसपास के ग्रामों से करीब डेढ़ हजार स्त्री-पुरुष वहाँ पहुँचे थे.... पोन्नूर के आसपास जैनधर्म का खूब प्रचार है तथा वहाँ की जनता में पोन्नूर तीर्थ का माहात्म्य है। तलहटी में मंगल-प्रवचन करते हुए गुरुदेव ने कुन्दकुन्द प्रभु की महिमा व्यक्त की थी। पण्डितजी अनुवाद करते थे।

— इसप्रकार हर्षोल्लास के वातावरण में उस तपोभूमि की मंगलयात्रा करके पूज्य गुरुदेव संघ सहित वांदेवास पधारे और वहाँ के जैन समाज की ओर से संघ को भोजन दिया गया.... पश्चात् मद्रास तक के यात्री बम्बई लौटने के लिये (चार मोटर-बसों में) पृथक् हुए... गुरुदेव से तथा संघ से पृथक् होते हुए यात्री गद्गद् हो रहे थे... विदा का वह भावभीना दृश्य दर्शनीय था। चार मोटर बसें तथा अनेक मोटर कारें बम्बई के लिये रवाना हुईं जिनमें करीब ४०० यात्री थे... शेष चार मोटर बसों और दस मोटर कारों में २५० यात्रियों के साथ यात्रा जारी रखने के लिये गुरुदेव ने मद्रास की ओर प्रस्थान किया।

अकलंक बसती—

मद्रास की ओर जाते समय मार्ग में केरेन्दे (Karandai) में दो जिन मन्दिरों के दर्शन किये.... उनमें से एक मन्दिर का नाम 'अकलंक बसती' है। मन्दिर की दीवार पर एक प्राचीन चित्र अंकित है, जिसमें अकलंक स्वामी का बौद्धों के साथ शास्त्रार्थ हो रहा है और शास्त्रार्थ में जीतने के पश्चात् वे ध्यान लगाकर बैठे हैं। अकलंक स्वामी का समाधिस्थल भी वहीं है। आसपास के करीब एक हजार स्त्री-पुरुष गुरुदेव के दर्शनार्थ आये थे और गुरुदेव को तामिल भाषा में एक स्वागत पत्रिका अर्पण की गई थी। गुरुदेव ने अपने मंगल-प्रवचन में अकलंक स्वामी, कुन्दकुन्द स्वामी आदि संतों की महिमा प्रगट की थी। प्रवचन के बाद गुरुदेव को अभिनन्दन-पत्र दिया गया था। जैनधर्म के महान प्रभावक अकलंक स्वामी का स्थान देखकर गुरुदेव और भक्तों को आनन्द हो रहा था। सायंकाल संघ मद्रास आ गया था।

— इसप्रकार 'पूज्य श्री कानजी स्वामी दिगम्बर जैन तीर्थयात्रा संघ' द्वारा दक्षिण के तीर्थों की यात्रा में बम्बई से मद्रास तक का प्रथम यात्रा वृत्तान्त पूरा हुआ।

मद्रास से चलकर पूज्य गुरुदेव संघ सहित बेजवाड़ा, हैदराबाद, सोलापुर, कुंथलगिरि, औरंगाबाद होते हुए अजन्ता-एलोरा की गुफाएँ देखकर ता. २९-३-५९ के दिन जलगाँव पहुँच गये थे।— इस यात्रा का वृत्तान्त आगे देखें।



'पूज्य श्री कानजी स्वामी दिगम्बर जैन तीर्थ यात्रा संघ' गुरुदेव के साथ आनन्द पूर्वक तीर्थ यात्रा करता हुआ विचर रहा था..... गुरुदेव जहाँ जाते थे, वहाँ विशाल महोत्सव का दृश्य उपस्थित हो जाता था.... जैन जनता स्थान-स्थान पर हार्दिक स्वागत कर रही थी। यहाँ ता० ७-४-५९ तक के यात्रा-समाचार दिये जा रहे हैं; उस दिन संघ अमरावती नगर में था।

अब मद्रास से आगे बढ़ने के पूर्व मुम्बई से मद्रास तक की यात्रा का स्मरण कर लें।

माघ शुक्ला अष्टमी, ता० १६-२-५९ के दिन बम्बई से प्रस्थान करके मुम्ब्रा होते हुए पूना आये... फिर फलटन शहर के भव्य जिनालयों के दर्शन करके दही गाँव में सीमंधरादि भगवन्तों के दर्शन किये... फिर बाहुबलि (कुम्भोज) क्षेत्र में २८ फुट ऊँची बाहुबलि भगवान की प्रतिमा,

समवशरण मन्दिर, बाहुबलि मन्दिर, मानस्तम्भ, तथा छोटे से पर्वत पर तीन मन्दिरों के दर्शन किये... पश्चात् कोल्हापुर होकर बेलगाँव आये; वहाँ किले के प्राचीन जिनमन्दिर में नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती द्वारा प्रतिष्ठित नेमिनाथ भगवान के दर्शन किये। हुबली होकर रमणीक वन-मार्ग से गुजरते हुए हूमच आये... वहाँ अनेक प्राचीन जिनालय तथा रत्नादि की प्रतिमाओं के दर्शन किये... तथा पर्वत के जिनमन्दिर में बाहुबलिनाथ के दर्शन किये। फिर अति उत्साह पूर्व कुन्दगिरि (कुन्दाद्रि) तीर्थधाम की यात्रा करके, बीच में विशाल घाटी पार करते हुए मूलबिंद्री आये... वहाँ त्रिभुवन तिलक चूड़ामणि मन्दिर में रात्रि को हजारों दीपकों की जगमगाहट में दर्शन किये... रत्नादि की प्रतिमाओं के तथा ताड़पत्रोक्त जिनवाणी के अत्यन्त भक्तिभावपूर्वक पुनः पुनः दर्शन किये... अन्य अनेक जिनालयों में चौबीस तीर्थकर आदि के दर्शन किये... कारकल में ४१ फुट ऊँची बाहुबलि भगवान की मूर्ति तथा अनेक जिन मन्दिरों के दर्शन किये... वेणूर में करीब ३५ फुट ऊँचे बाहुबलि भगवान के दर्शन करके हलेबिड में प्राचीन कलायुक्त जिनमन्दिर तथा १५-२० फुट ऊँचे अति भव्य भगवन्तों के दर्शन किये... हासन में भव्य स्वागत हुआ और फाल्गुन कृष्ण नवमी के दिन गुरुदेव श्रवण बेलगोला पहुँचे। वहाँ संघसहित अति उल्लास पूर्वक बाहुबलि भगवान की यात्रा एवं पूजा भक्ति हुई। बाहुबलि भगवान की ५७ फुट ऊँची अति मनो वीतरागी उपशांत आत्मध्यानी मूर्ति को निहारते ही सन्तों के हृदय से मानों ध्वनि निकल रही हो कि—

मने लागे संसार असार...

आ रे... संसारमां नहिं जाऊँ... नहिं जाऊँ... नहिं जाऊँ रे...

मने ज्ञायक भाव नो प्यार...

अ रे.... ज्ञायकमां हूँ लीन थाऊँ... लीन थाऊँ.... लीन थाऊँ रे...

मने सिद्ध स्वरूप नो प्यार....

अ रे... सिद्धपदमां नमी जाऊँ... नमी जाऊँ... नमी जाऊँ रे...

—ऐसे उत्कृष्टभाव से पुनः पुनः बाहुबलि भगवान के दर्शन किये दूसरी पहाड़ी चन्द्रगिरि पर अनेक जिनालयों के, कुन्दकुन्द प्रभु आदि सम्बन्धी अनेक शिलालेखों के तथा भद्रबाहु स्वामी की गुफा के दर्शन किये... गाँव की जनता ने गुरुदेव का भव्य स्वागत किया... फिर मैसूर में भव्य स्वागत हुआ... स्वागत-जुलूस में चार हाथी भी थे... श्री रंगम्पट्टम में २४ तीर्थकर और गोम्मटगिरि में बाहुबलि भगवान देखे... फिर बेंगलोर होकर मद्रास आते समय मार्ग में गुरुदेव ने

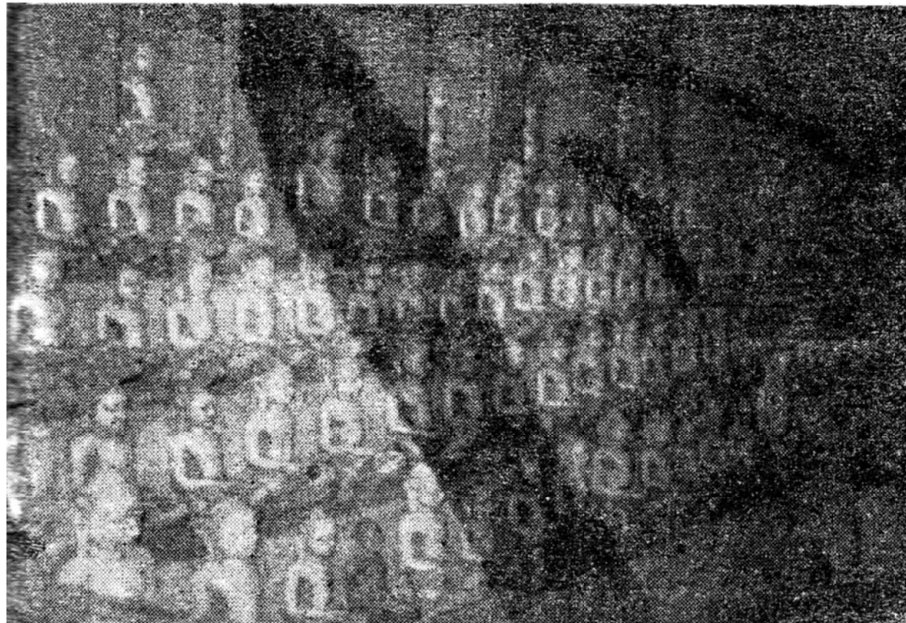
पुंडीग्राम में प्राचीन प्रतिमाओं के दर्शन किये... फाल्गुन शुक्ला एकम के दिन मद्रास में गुरुदेव का भव्य स्वागत हुआ... फाल्गुन शुक्ला पंचमी के दिन पोन्नूर की पहाड़ी पर कुन्दकुन्द स्वामी की तपोभूमि की उल्लासपूर्ण यात्रा की... लगभग सात सौ भक्तों सहित कहान गुरुदेव ने चम्पा वन के नीचे बने हुए कुन्द प्रभु के चरणों के दर्शन किये... और भक्तिभावपूर्वक उस पावन धाम को देखा...

यहाँ यात्रा की पहली किशत पूरी हुई... और लगभग ४०० यात्री बम्बई की ओर रवाना हो गये... शेष ढाई सौ यात्रियों सहित अकलंक बसती आदि के दर्शन करते हुए गुरुदेव मद्रास पधारे.....

यहाँ तक का यात्रा-वृत्तान्त 'आत्मधर्म' के पिछले अंकों में आ गया है.. अब हम आगे बढ़ें..

बेजवाड़ा-हैदराबाद —

फाल्गुन शुक्ला ६, ता० १५-३-५९ के दिन मद्रास से नेल्लूर होकर संघ बेजवाड़ा पहुँचा... फाल्गुन शुक्ला सप्तमी के दिन गुरुदेव बेजवाड़ा पधारे.. और गुजराती समाज की ओर से भव्य स्वागत हुआ वहाँ से चलकर संघ फाल्गुन शुक्ला अष्टमी के दिन हैदराबाद पहुँचा और दो दिन से भगवान के विरह में पड़े हुए भक्त रिक्शों में बैठ-बैठकर आनन्द पूर्वक भगवान के दर्शनों को दौड़े। रात्रि को पूज्य बेन श्री बेन ने (अष्टाह्निका तथा यात्रा-उत्सव के निमित्त से) नये-नये



हैदराबाद के एक जिन मन्दिर के भगवन्त

भक्ति-गीत गवाये। फाल्गुन शुक्ला नवमी के दिन गुरुदेव हैदराबाद पधारे और भक्तों ने स्वागत किया। वहाँ गुरुदेव के साथ चारों जिन मन्दिर के दर्शन किये; जहाँ सैकड़ों प्राचीन मूर्तियाँ विराजमान हैं। तदुपरान्त यहाँ के विशाल म्यूजियम में श्री पार्श्वनाथ और महावीर भगवन्तों की (२४ तीर्थकरों सहित) अति मनोज्ञ प्रतिमाएँ देखीं...

सोलापुर—

हैदराबाद से प्रस्थान करके संघ फाल्गुन शुक्ला ११ के सायंकाल सोलापुर पहुँचा... रात्रि को राजुलदेवी श्राविकाश्रम के जिनालय में पूज्य बेन श्री बेन ने भक्ति कराई थी... फाल्गुन शुक्ला १२ के दिन गुरुदेव के पधारते ही जैन समाज में उत्साह पूर्वक स्वागत किया... श्राविकाश्रम की अधिष्ठाता पं० सुमतीबाई ने यात्रा संघ की व्यवस्था बड़े वात्सल्यभाव से की थी... पं० सुमतीबाई बाल ब्रह्मचारिणी हैं और उन्हें सोनगढ़ से प्रेम है। सेठ श्री रावजीभाई तथा सेठ माणेकलालभाई आदि ने भी रुचिपूर्वक भाग लिया था। स्वागत के अवसर पर आश्रम के जिनालय में श्री कुन्दकुन्द स्वामी और गुरुदेव के तिरंगे रंगोली-चित्र बनाये गये थे, जो कलामय और दर्शनीय थे... गुरुदेव ने आदिनाथ मन्दिर में मांगलिक सुनाया था। पूज्य गुरुदेव तथा पूज्य बेन श्री बेन के सत्समागम से सुमतीबाई के हर्ष का पार नहीं था। गुरुदेव के पधारने से तथा सोनगढ़ और सोलापुर के आश्रम की बहिनों के मिलन से सोनगढ़ जैसा ही वातावरण लग रहा था। सोलापुर में सात जिन-मन्दिर हैं... जिनमें रत्नत्रय भगवन्त आदि की सुन्दर प्रतिमाएँ विराजमान हैं। गुरुदेव का प्रवचन जैन बोर्डिंग में बनाये गये मंडप में होता था और प्रवचन में हजारों स्त्री-पुरुष भाग लेते थे। रात्रि को श्राविकाश्रम में कमलासन महावीर के सम्मुख भक्ति हुई थी... भक्ति के समय मन्दिर खचाखच भर गया था... पूज्य बेन श्री बेन ने वैराग्य एवं उल्लास भरी भक्ति कराई थी। भक्ति के पश्चात् दोनों आश्रम की बहिनों में परस्पर परिचय-विधि हुई थी; तत्पश्चात् रास-नृत्य एवं तत्त्वचर्चा का कार्यक्रम भी रखा गया था। परस्पर परिचय से दोनों आश्रम की बहिनें खूब प्रसन्न हो रही थीं। फाल्गुन शुक्ला त्रयोदशी के प्रातःकाल प्रवचन के पश्चात् जैन बोर्डिंग में गुरुदेव का स्वागत-समारम्भ हुआ और दोपहर को श्री आदिनाथ के मन्दिर में सुन्दर भक्ति हुई। भक्ति में पूज्य बेन श्री बेन की तन्मयता देखकर लोगों को आनन्दाश्चर्य हो रहा था। रात्रि को श्राविकाश्रम में आध्यात्मिक तत्त्वचर्चा हुई थी और तत्त्वचर्चा के पश्चात् आश्रम की ओर से प्रधानाध्यापिका विद्युल्लताबेन शाह (बी०ए०बी०टी०) ने अत्यन्त भावपूर्वक मराठी भाषा में आभार दर्शन किया था। विद्युल्लताबेन

बाल ब्रह्मचारिणी हैं, शास्त्रों का अच्छा अभ्यास है और उन्हें सोनगढ़ के प्रति अत्यन्त प्रेम है। आभार दर्शन में उन्होंने सोनगढ़ के आध्यात्मिक वातावरण की प्रशंसा की थी और गुरुदेव संघ सहित सोलापुर में पधारे तथा श्राविकाश्रम पधारकर अध्यात्म चर्चा का लाभ दिया, उसके लिये अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक आभार प्रदर्शित किया था। पूज्य बेन श्री बेन तीन दिन तक आश्रम में रहीं और आध्यात्मिक भक्ति तथा चर्चा का लाभ दिया, उसके लिये उसका भी आभार माना था। पूज्य बेन श्री बेन के सहवास से आश्रम की बहिनें अत्यन्त प्रभावित हुई थीं और उनके ज्ञान-शांति-वैराग्य तथा भक्ति की तल्लीनता की मुक्तकंठ से प्रशंसा की थी। सोलापुर आश्रम का वातावरण शांत तथा उल्लासपूर्ण है। पं० सुमती बहिन के नेतृत्व में आश्रम की बहिनें और कार्यकर्ता अत्यन्त प्रेम और रुचि पूर्वक संघ की व्यवस्था में भाग ले रहे थे। सचमुच सोलापुर के वे दो दिन—मुख्यतः राजुलदेवी श्राविकाश्रम के दो दिन—यात्रियों को सदा याद रहेंगे।

— इसप्रकार सोलापुर का कार्यक्रम समाप्त करके फाल्गुन शुक्ला १४ के प्रातः काल गुरुदेव ने संघ सहित कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र की ओर प्रस्थान किया। आश्रमवासियों ने भावभीनी विदा दी। ब्रह्मचारिणी पं० सुमतीबाई की हार्दिक इच्छा होने से वे संघ के साथ कुंथलगिरि की यात्रा के लिये गई थीं।

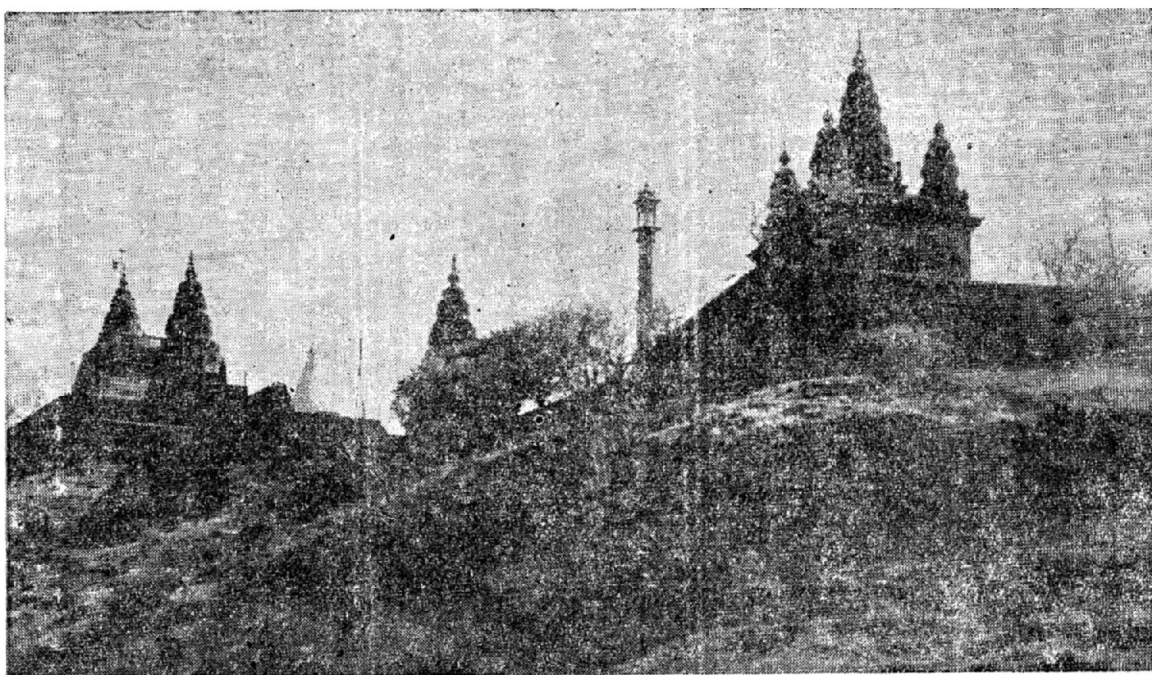
धाराशिव की जैन गुफाएँ—

सोलापुर से कुंथलगिरि जाते समय मार्ग में उस्मानाबाद से तीन मील दूर धाराशिव की गुफाएँ हैं; जिन्हें देखने के लिये संघ गया था। वहाँ पहाड़ में प्राचीन गुफाएँ खुदी हैं। कहते हैं कि वे गुफाएँ करकडु राजा ने बनवाई थीं। अनेक गुफाओं में जिन प्रतिमाएँ विराजमान हैं... एक गुफा में बावड़ी भी है। गुरुदेव आदि गुफाओं में पहले पहले पहुँच गये थे... पीछे रहे हुए सैकड़ों यात्री गुरुदेव को और गुफाओं ढूँढ़ते हुए चारों ओर घूम रहे थे... गुफावासी भगवन्तों के दर्शन होते ही यात्रियों ने जयध्वनि की... और हर्ष पूर्वक दर्शन करके फिर भक्ति की... गुफाओं का वातावरण शांत है... किसी-किसी गुफा में तो इतनी शांति है जैसे महामुनियों के समीप बैठे हों। एक विशाल गुफा में पार्श्वनाथ भगवान की करीब ७ फुट ऊँची प्रतिमा विराजमान है।

धाराशिव की जैन गुफाएँ देखकर उस्मानाबाद में पारस प्रभु आदि के दर्शन करके कुंथलगिरि की ओर प्रस्थान किया... गुरुदेव उस्मानाबाद में ठहर गये और वहाँ प्रवचन के बाद कुंथलगिरि पधारे।

कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र—

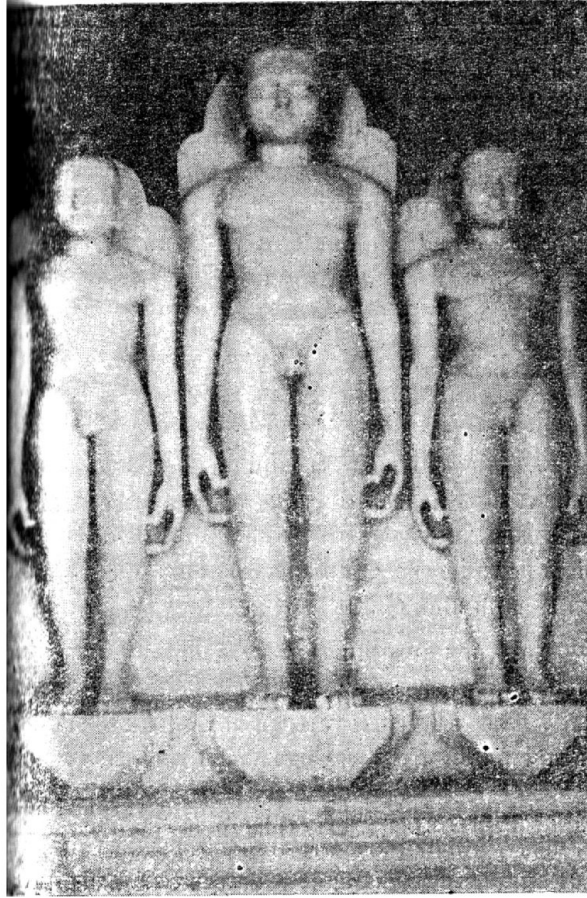
दूर-दूर से इस सुहावने सिद्धक्षेत्र के दर्शन होते ही आनन्द होता है... सिद्धिधाम का सौन्दर्य देखते ही बनता है... क्षेत्र की अर्द्धचक्राकार परिक्रमा करती हुई गुरुदेव की मोटर कुंथलगिरि पहुँची और भावभीना स्वागत हुआ.... ब्रह्मचर्याश्रम के विद्यार्थियों ने संस्कृत में स्वागत गीत गाया... पश्चात् जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करके श्री समन्तभद्र मुनि महाराज के साथ गुरुदेव का



कुंथलगिरि का सुन्दर दृश्य

मिलन हुआ और प्रसन्न वातावरण के बीच करीब एक घण्टे तक प्रेमपूर्ण वार्तालाप होता रहा। श्रीमुनि महाराज ने प्रमोदपूर्वक कहा कि आपने आत्मसाधना की है, और जब आप यहाँ आये हैं तो हमें भी लाभ मिलना चाहिये, फिर तीनों दिन चर्चा-बातचीत काफी समय तक होती थी। कटनी से पं० जगन्मोहनलाल शास्त्री भी वहाँ आये थे, गुरुदेव के साथ तत्त्वचर्चा और बातचीत करके खूब प्रसन्न हुए थे।

कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र से देशभूषण, कुलभूषण आदि करोड़ों मुनिवर मोक्ष पधारे हैं.... पर्वत बड़ा सुहावना है... तलहटी में पाँच तथा ऊपर चार—इसप्रकार कुल नौ जिनमन्दिर हैं... ऊपर के



कुन्थलगिरि के रत्नत्रय भगवन्त

मुख्य मन्दिर में देशभूषण, कुलभूषण मुनिवरों की मनोज्ञ खड्गासन प्रतिमाएँ हैं... मानों इसी क्षण क्षपकश्रेणी लगाकर केवलज्ञान प्राप्त करते हों—ऐसे भाव उनके दर्शनों से जागृत होते हैं। मन्दिर के ऊपरी भाग में सीमंधर भगवान विराजमान हैं... नीचे के मन्दिर में रत्नत्रय भगवन्तों की भाववाही खड्गासन प्रतिमाएँ हैं।

अनेक भक्त तो फाल्गुन शुक्ला १४ के सायंकाल ही ऊपर जाकर भगवान की वन्दना कर आये थे। रात्रि को जिनमन्दिर में रत्नत्रय भगवन्तों के सन्मुख उल्लास भरी भक्ति हुई थी। सिद्धक्षेत्र में पूज्य बेन श्री बेन की वैराग्यमयी भक्ति देखकर सबको हर्ष हो रहा था।

फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा के प्रातःकाल साढ़े छह बजे पूज्य गुरुदेव ने संघ सहित कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्र की यात्रा के लिये पर्वत की ओर प्रस्थान किया... आज पूज्य गुरुदेव भी पैदल यात्रा कर

रहे थे और गुरुदेव के साथ चलते हुए भक्तों को विशेष आनन्द आ रहा था। करीब दस मिनट में ही पर्वत पर पहुँच गये... उल्लासपूर्ण वातावरण में दर्शन-पूजन-अभिषेक और भक्ति का कार्यक्रम समाप्त हुआ। स्वयं गुरुदेव ने भी भक्ति गवायी थी। देशभूषण और कुलभूषण मुनिवरों की भक्ति कराते-कराते बीच में प्रमोदपूर्वक गुरुदेव ने कहा—‘देश’ अर्थात् असंख्य प्रदेश; उनका ‘भूषण’ अर्थात् शोभा; अर्थात् असंख्य प्रदेशी पवित्र चैतन्यधाम, वह ‘देशभूषण’; और ‘कुलभूषण’ अर्थात् अनन्त गुणरूपी कुल से सुशोभित ऐसा आत्मा; उसकी आराधना (श्रद्धा-ज्ञान-रमणता), वह सच्ची यात्रा है।



कुन्थलगिरि पर्वत के ऊपर के मुनिवरों के पास पू० गुरुदेव

गुरुदेव की भक्ति तथा भावभीने उद्गार सुनकर यात्रियों में उल्लास छा गया था।

वन्दों वन्दों जी.... हाँ हाँ वन्दों वन्दों जी, कुंथलगिरि तीरथ,

देशभूषण मोक्ष गये... कुलभूषण मोक्ष गये...

—इत्यादि प्रकार की भक्ति हुई थी।

यात्रा के बाद नीचे उतरते हुए बीच में नन्दीश्वर-मन्दिर आया। उस दिन-नन्दीश्वर अष्टाह्निका पर्व के अंतिम दिन-सिद्धिधाम में गुरुदेव के साथ नन्दीश्वर-मन्दिर के दर्शन-यात्रा करते हुए भक्तों के हर्ष का पार नहीं था...

दोपहर को प्रवचन के बाद सिद्धिधाम के सम्मुख भक्ति हुई थी—

भवि भावे कुंथलगिरि आवो... सिद्धक्षेत्र जोवाने,

भवि भावे आ तीर्थधाम आवो... मुनिधाम जीवाने...

रात्रि को अनेक विषयों पर सुन्दर तत्त्वचर्चा हुई थी।

पूज्य गुरुदेव को विशेष भक्ति के भाव आने से चैत्र कृष्णा एकम के दिन कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र की दूसरी यात्रा की... विधिपूर्वक तीन पूजन के पश्चात् मुनिवरों की उल्लासपूर्ण भक्ति हुई... भक्ति के पश्चात् अनेक भक्तों ने मुनिवरों की चरण पादुका का अभिषेक किया था। यात्रा के बाद सब गाते हुए नीचे उतरे और गुरुदेव का प्रवचन हुआ... उसके बाद आहारदान का प्रसंग दर्शनीय था... दोपहर को १ बजे से २ बजे तक जातिस्मरण तथा सम्यग्दर्शन आदि सम्बन्धी सुन्दर तत्त्वचर्चा हुई। उसके बाद गुरुदेव का प्रवचन। हमेशा तत्त्वचर्चा-प्रवचन तो मुनि श्री समंतभद्र महाराज के समीप होते थे।

सायंकाल ५ बजे गुरुदेव ने कुंथलगिरि से औरंगाबाद की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में कचनेरा गाँव में श्री पार्श्वनाथ भगवान तथा बीस विहरमान भगवन्तों के दर्शन किये थे। यात्री संघ कुंथलगिरि ठहर गये थे। पू० बेन श्री बेन ने रात्रि को कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र में भक्ति कराई थीं और पुनः पर्वत की वन्दना के लिए गई थीं... वहाँ मुनि परिणति, सम्यग्दर्शन, यात्रा का हेतु आदि सम्बन्धी वार्तालाप हुआ था... नीचे उतरकर भक्तों ने धर्मशाला में रास-नृत्यपूर्वक भक्ति करके अपना उल्लास व्यक्त किया था।

कुंथलगिरि सिद्धिधाम की अपूर्व यात्रा करानेवाले

गुरुदेव को नमस्कार हो!

औरंगाबाद—

चैत्र कृष्णा दूज के प्रातःकाल कुंथलगिरि सिद्धिधाम के पुनः पुनः दर्शन करके संघ ने औरंगाबाद की ओर प्रस्थान किया... मार्ग में गुरुदेव ने अडुल ग्राम में महावीर स्वामी की सुन्दर गुलाबी पाषाण की चमकदार प्रतिमा के दर्शन किये थे। औरंगाबाद में पाँच जिनमन्दिर हैं।

अजन्ता-एलोरा की गुफाएँ—

चैत्र कृष्णा तृतीया ता० २७ मार्च के प्रातःकाल एलोरा की गुफाएँ देखने गये। गुफा नं० ३० से ३४—यह पाँच जैन गुफाएँ हैं। उनमें दीवारों पर बाहुबलिनाथ, पार्श्वनाथ आदि भगवन्तों की सैकड़ों प्रतिमाएँ खुदी हुई हैं... तथा अन्य प्राचीन कला दर्शनीय है। पर्वत में कटी हुई भव्य और गहरी गुफाएँ तथा जिनबिम्ब देखकर सबको खूब प्रसन्नता हुई... गुफा में प्राचीन चित्र भी हैं। दूसरी भी अनेक गुफाएँ हैं जिन्हें देखकर संघ औरंगाबाद लौटा। रात्रि को यात्रा संघ की एक सभा हुई थी।

चैत्र कृष्णा ४ के प्रातःकाल औरंगाबाद से चलकर अजन्ता की गुफाएँ देखने गये। वहाँ मुख्यतः बौद्धों की ही गुफाएँ हैं। गुफाएँ देखने के बाद संघ ने करीब एक मील दूर चलकर एक मील के कम्पाउण्ड में भोजन किया और सायंकाल जलगाँव पहुँचे... जलगाँव में एक जिनमन्दिर तथा दो गृह चैत्य हैं।

जलगाँव शहर (ता० २९-३-५९)

प्रातःकाल गुरुदेव के आते ही भव्य स्वागत हुआ... स्वागत में तथा संघ की व्यवस्था में तीनों जैन सम्प्रदायों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया था। मांगलिक-प्रवचन के बाद सेठ जयन्तीलाल अमुलकचन्द दोशी ने अपने स्वागत-भाषण में कहा था कि—तीनों जैन सम्प्रदायों की ओर से पूज्य कानजी स्वामी का सामूहिक-स्वागत करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष हो रहा है। पूज्य स्वामीजी यहाँ पधारे, उसे हम जलगाँव का महाभाग्य मानते हैं। उसके बाद सेठ भीखमचन्दजी जैन ने जलगाँव की समस्त जनता की ओर से स्वागत करते हुए कहा था कि—सौराष्ट्र में महान धर्मक्रांति करनेवाले आध्यात्मिक संत आज जलगाँव पधारे हैं, यह जलगाँव की जनता का महाभाग्य है; जलगाँव की जनता की ओर से मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ। संघ के स्वागत में तथा प्रवचनादि में जलगाँव की जनता ने भारी उत्साहपूर्वक भाग लिया था। दूर-दूर बाहर गाँव से गुरुदेव का दर्शन के लिये बहुत व्यक्ति आये थे। दोपहर को प्रवचन के बाद श्री आनन्दीलाल भाई ने भक्ति-भावना-पूर्वक गुरुदेव के प्रति आभार प्रदर्शित किया था। सायंकाल वहाँ से चलकर संघ मलकापुर पहुँचा



एलोरा की गुफा

था... मलकापुर जैन समाज ने बड़ी उमंग से गुरुदेव का तथा संघ का स्वागत किया था। सभी जैन समाज और शहर का उत्साह देखते ही बनता था।

मलकापुर (ता० ३०-३-५९)

प्रातःकाल गुरुदेव का आगमन होते ही 'जिनशासन-मंडप' में गुरुदेव के शुभहस्त से ध्वजारोहण हुआ... पश्चात् भव्य स्वागत-यात्रा निकली। तीनों जैन सम्प्रदायों के अतिरिक्त अनेक नागरिकों ने भारी उत्साहपूर्वक भाग लिया था। सीमंधर द्वार, महावीर द्वार, चन्द्रनाथ द्वार, सुमतिनाथ द्वार, पार्श्वनाथ द्वार, कुन्दकुन्द द्वार, तीर्थभक्त द्वार, कानजी स्वामी द्वार आदि अनेक द्वारों से गुजरता हुआ स्वागत-जुलूस सुसज्जित जिन मंडप में समाप्त हुआ। गुरुदेव के प्रवचनादि कार्यक्रम के लिये ही वह मंडप बनाया गया था। गुरुदेव के दर्शनार्थ दूर-दूर से अनेक स्त्री-पुरुष आये थे। दोपहर के समय गुरुदेव को अभिनन्दन-पत्र अर्पित किया गया था।

चैत्र कृष्ण ७ के प्रातः जिनमन्दिर में सामूहिक-पूजन हुई थी। मलकापुर में दो जिन मन्दिर हैं; एक में महावीरस्वामी की अत्यन्त भव्य एवं विशाल प्रतिमा विराजमान हैं जो पूज्य गुरुदेव के शुभहस्त से वींछिया (सौराष्ट्र) में प्रतिष्ठित हुई थी। वहाँ गुरुदेव के उपदेश से प्रभावित होकर दो

कुमार बन्धुओं ने ब्रह्मचर्य-प्रतिज्ञा की भावना व्यक्त की थी। तदुपरान्त श्री नथुशा, रूपचन्दशा और नेमिचन्दशा—इन तीनों भाइयों ने तथा कचरूशा और रामुशा ने गुरुदेव के निकट सपत्नीक आजन्म ब्रह्मचर्य प्रतिमा अंगीकार की थी। पूज्य बेन श्री बेन ने जिन शासन मंडप में भक्ति कराई थी और दोपहर को एक समारम्भ करके वहाँ के महिला समाज ने पूज्य बेन श्री बेन को अभिनन्दन-पत्र अर्पण किया था।—इसप्रकार दो दिन के कार्यक्रम उत्साहपूर्वक समाप्त हुए थे।

शिरपुर (अंतरिक्ष पार्श्वनाथ)

अब 'पूज्य श्री कानजी स्वामी दि० जैन तीर्थयात्रा संघ' ढाई सौ यात्रियों सहित दक्षिण के तीर्थों की यात्रा समाप्त करके विदर्भ प्रान्त में विचर रहा था। ता० १-४-५९ के दिन मलकापुर से प्रस्थान करके, खामगाँव होता हुआ संघ शिरपुर पहुँचा। वहाँ अकोला, बासीम आदि सौ-सौ मील दूर के नगरों से हजारों स्त्री-पुरुष पूज्य गुरुदेव के दर्शनार्थ आये थे। एक मन्दिर में पार्श्वनाथ आदि भगवन्त विराजमान हैं। भोंयरे में पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा है, जिसके दोनों ओर का किंचित् भाग ही धरती को स्पर्श करता है; इसलिये उन भगवान को "अंतरिक्ष पार्श्वनाथ" कहते हैं। उनके दर्शन-पूजन के लिये दिगम्बर और श्वेताम्बरों का बारी बारी से अमुक समय निश्चित है। दोपहर को साढ़े बारह बजे भक्तों ने गुरुदेव के साथ 'अंतरिक्ष पार्श्वनाथ' के दर्शन-पूजन किये थे। आकोला से आये हुए भाइयों ने गुरुदेव प्रति भारी प्रेम दिखाया था, संघ को शाम का भोजन अपनी ओर से कराया था।

दोपहर के प्रवचन में करीब तीन हजार स्त्री-पुरुष उपस्थित थे। आसपास के ग्रामों से हजारों आदमी बैलगाड़ियों द्वारा आये थे। प्रवचन के बाद गुरुदेव को अभिनन्दन-पत्र दिये गये। सोनगढ़ से प्रेम रखनेवाले एक सज्जन ने 'परमपारिणामिकभाव की जय' बुलवाई थी। शिरपुर में एक और भी प्राचीन मन्दिर है; वहाँ दर्शन करके संघ ने प्रस्थान किया और रात को कारंजा पहुँचा। कारंजा जाते समय मार्ग में बासीम में गुरुदेव का स्वागत हुआ और गुरुदेव ने वहाँ के प्राचीन मन्दिरों में अमीझरा पार्श्वनाथ आदि के दर्शन किये।

कारंजा (ता० २-४-५९)

चैत्र कृष्ण १० के दिन गुरुदेव कारंजा पधारे और वहाँ भव्य स्वागत हुआ। वहाँ स्वागत-यात्रा के समय सुसज्जित जीप-कार में बैठे हुए गुरुदेव का दृश्य दर्शनीय था।

कारंजा में तीन भव्य दिगम्बर जिन मन्दिर हैं; जिनमें सैकड़ों मनोह्र प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

एक मन्दिर में रत्न, पन्ना, नीलम, गरुड़-मणि, सुवर्ण, चाँदी, स्फटिक आदि की प्रतिमाएँ हैं और भोंयरे में पार्श्वनार्थ आदि भगवान विराज रहे हैं। दूसरे मन्दिर में शास्त्र भण्डार है। उपरान्त, महावीर ब्रह्मचर्याश्रम में भी जिनालय है जिसमें महावीरादि भगवन्तों के मनोज्ञ जिनबिम्ब हैं। वहीं रत्नादि की प्रतिमाएँ तथा धवल-जयधवल की हस्तलिखित प्रतियाँ भी हैं। ब्रह्मचर्याश्रम में ही गुरुदेव का स्वागत-समारोह हुआ था। गुरुदेव ने आश्रम के दो सौ विद्यार्थियों के समक्ष करीब दस मिनट तक भावपूर्ण प्रवचन किया था। स्थानीय गुजराती भाइयों ने भी व्यवस्था में सहयोग दिया था।

कारंजा का जैन समाज विशेष रुचिपूर्वक स्वाध्याय-प्रेमी है। प्रवचन के समय तीन-चार हजार स्त्री-पुरुष एकत्रित हुए थे। पं० धन्यकुमारजी ने स्वागत-भाषण दिया था और रात्रि को बड़ी रोचक शैलीपूर्वक सम्यग्दर्शन आदि के सम्बन्ध में आध्यात्मिक तत्त्वचर्चा हुई थी। तत्पश्चात् पूज्य बेन श्री बेन ने महिलाश्रम के चैत्यालय में शांतिनाथ भगवान के सन्मुख सरस भावपूर्ण भक्ति कराई थी। भक्ति करते हुए भक्तों को अपार हर्ष हो रहा था। उस एक दिन के कार्यक्रम में कारंजा के समाज ने खूब आनन्दोल्लास प्रदर्शित किया। पूज्य गुरुदेव से एक दिन विशेष रहने के लिये समाज की ओर से भारी अनुरोध किया गया था, किन्तु गुरुदेव आदि ने विवशता प्रगट की थी। वास्तव में वहाँ के लोगों की आध्यात्मिक रुचि देखते हुए एक दिन का समय कम था; किन्तु प्रोग्राम भी निश्चित हो चुका था। अगास (गुजरात) के श्रीमद् राजचन्द्र-आश्रम के मन्दिर में विराजमान श्री चन्द्रप्रभ भगवान की प्रतिमा कारंजा के मन्दिर से ही वहाँ भेजी गई थी। गुरुदेव महिलाश्रम में भी पधारे थे और वहाँ पाँच-पाँच वर्ष की बालिकाओं ने उनका अध्यात्म-गीत द्वारा स्वागत किया था।

परतवाड़ा (एलचपुर)

चैत्र कृष्ण ११ के दिन कारंजा से प्रस्थान करके संघ परतवाड़ा (एलचपुर) में सेठ श्री गेंदालालजी आदि के अनुरोध से भोजन के लिये रुका। गुरुदेव का भव्य स्वागत किया गया था... दोपहर को गुरुदेव का प्रवचन हुआ था, जिसमें लोग सैकड़ों की संख्या में उपस्थित थे। प्रवचन के बाद गुरुदेव मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र पहुँचे और पूज्य बेन श्री बेन आदि भक्तजनों ने भावभीना स्वागत किया। कुछ यात्री तो सायंकाल ही पर्वत पर जाकर सिद्धक्षेत्र के दर्शन कर आये थे।

मुक्तागिरि-सिद्धक्षेत्र

मुक्तागिरि प्राचीन तथा सुन्दर सिद्धक्षेत्र है; वहाँ से साढ़े तीन करोड़ मुनिवरो ने मोक्ष प्राप्त किया है। पर्व पर ५१ जिनालय हैं; कोई-कोई जिनालय तो पर्वत की गुफा में है... दस नम्बर का

मन्दिर तो पहाड़ की गुफा में ही काटा गया है। चारों ओर दीवारों में भी मुर्तियाँ अंकित हैं। वर्षा ऋतु में करीब २०० फुट की ऊँचाई से गिरता हुआ पानी का झरना अपने प्राकृतिक सौन्दर्य से जिनालय की शोभा को और भी बढ़ा देता है। चैत्र कृष्ण १२ के प्रातः काल गुरुदेव के साथ उस सिद्धिधाम की यात्रा प्रारम्भ हुई। प्रथम १० मन्दिरों के बाद ११ से २६ मन्दिर एक विशाल चौगान में हैं; उनमें से एक मन्दिर में बाहुबलि भगवान की करीब १० फुट ऊँची प्रतिमा है। २५ वाँ मन्दिर अति प्राचीन है और उसमें पार्श्वनाथ भगवान की प्राचीन प्रतिमा विराजमान है। उपरान्त, दीवारों में भी २४ तीर्थकरादि की प्रतिमाएँ काटी गई हैं। उसी मन्दिर में बैठकर सबने गुरुदेव के साथ तीर्थ पूजा (मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र की पूजा) की।

३१ से ३५ तक के मन्दिर पर्वत के शिखर पर हैं; जिनमें मोक्षगामी मुनिवरों की चरण पादुका हैं। पर्वत का दृश्य अति सुहावना है। पर्वत की वन्दना के पश्चात् सब भक्ति गाते-गाते नीचे उतरे... किसी-किसी मन्दिर में रत्नत्रय भगवन्त विराजमान हैं।

४८ तथा ४९ वें मन्दिर पर्वत की गुफा में हैं—जैसे पर्वत अपने हृदय में भगवान की स्थापना करके उनका ध्यान कर रहा हो! गुफा में ८ फुट ऊँची प्राचीन प्रतिमाएँ विराजमान हैं; जिनके पास जाने के लिये लम्बी तथा गहरी गुफा पार करना पड़ती है.... गुरुदेव के साथ गुफा-विहार करते समय भक्तों को आनन्द आ रहा था और जब गुरुदेव के प्रताप से भगवान को देखा, तब मानों मुमुक्षुओं के हृदय से ध्वनि उठ रही थी कि—

**“हे जिनवर तुज चरण कमल के भ्रमर श्री कहान प्रतापे,
‘जिन’ पाम्यो... ‘निज’ पामुं अहो, मुज काज पूरा सहु थाये।”**

गुफा के मन्दिरों में चौबीस तीर्थकर आदि से दर्शन करते हुए खूब आनन्द हुआ था... फिर मन्दिर से बाहर निकलकर सब लोग चौगान में बैठे और गुरुदेव ने यात्रा सम्बन्धी प्रसन्नता व्यक्त की... पूज्य बेन श्री बेन ने मुनिवरों की भक्ति कराई थी—

**साढ़े तीन क्रोड़ मुनि मुक्तागिरि में....
जाके राग-द्वेष नहीं मन में...
ऐसे मुनि को मैं नित प्रति ध्याऊँ
ए जी देत ढोक चरणन में....**

इसप्रकार आनन्दोल्लासपूर्वक यात्रा-पूजा-भक्ति करके मंगलगीत गाते हुए सब नीचे उतरे—

मुक्तागिरि मुक्तिधाम से मुक्ति प्राप्त करनेवाले संतों को नमस्कार हो....

मुक्तागिरि की मंगल-यात्रा करानेवाले गुरुदेव को नमस्कार हो....



मुक्तागिरि में भोजनादि की व्यवस्था अमरावती के सेठ नथुशाब पासुशाब की ओर से की गई थी—जो मुक्तागिरि क्षेत्र के अध्यक्ष भी हैं।

पर्वत की तलहटी में ही विशाल धर्मशाला है और उसमें विशाल जिनालय है। जहाँ रजत-सुवर्ण के भव्य सिंहासन पर आदिनाथ भगवान शोभायमान हो रहे हैं... वहाँ अति उल्लासपूर्वक भक्ति हुई थी... मुक्तागिरि की यात्रा के पश्चात् भावभीनी भक्ति करते हुए भक्तों को आनन्द हो रहा था—

मैं तेरे ढिग आया रे... मुनिवर के ढिग आया....

मैं तेरे ढिग आया रे... सिद्ध प्रभु ढिग आया...

मैं तेरे ढिग आया रे... मुक्तागिरि धाम आया...

मैं तेरे ढिग आया रे... गुरुवर के साथ आया...

गुरुवर के साथ आया रे... मैं मुक्तागिरि में आया....

— इत्यादि प्रकार से अन्तरभाव खोल-खोलकर पूज्य बेन श्री बेन भक्ति करा रही थीं... भक्ति के पश्चात् गुरुदेव ने प्रवचन द्वारा मुक्तागिरि धाम में मुक्ति का मार्ग बतलाया था।

प्रवचन के पश्चात् उत्साही कार्यकर्ता श्री बाबूरावजी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा था कि—इस काल ऐसे अध्यात्मतत्त्व का निरूपण करनेवाले संत को इस मुक्तिधाम में देखकर हम अपना अहोभाग्य मानते हैं। मैं सोनगढ़ गया, तब मुझे ऐसा अनुभव हुआ था जैसे वहाँ चौथा काल वर्त रहा हो... चौथे काल में समवसरण था... मैंने भी सोनगढ़ में समवसरण देखा... समवसरण में दिव्यध्वनि होती है, वहाँ भी मैंने गुरुदेव के मुख से भगवान की उसी दिव्यध्वनि का सार सुना... अब मैं एक स्तुति के द्वारा सोनगढ़ के तथा गुरुदेव के प्रति अपने भक्तिभाव व्यक्त करता हूँ... इतना कहकर उन्होंने 'जय गुरुदेव... श्री कहान गुरुदेव' की कविता पढ़ी।

पश्चात् क्षेत्र की व्यवस्था-समिति की ओर से आभार दर्शन करते हुए कहा कि—पूज्य श्री कानजी स्वामी मुक्तागिरि पधार रहे हैं—यह सुनकर हम पाँच महीने से चातक की भाँति प्रतीक्षा कर रहे थे... आज उनके दर्शन पाकर हम धन्य हुए हैं... उन्होंने स्वानुभूति का उपदेश देकर भवरोग से पीड़ित रोगियों को औषधि दी है... हमारी नम्र प्रार्थना है कि भविष्य में वे पुनः इस क्षेत्र में पधार कर हमें दर्शन दें।

गुरुदेव के दर्शनार्थ आसपास के ग्रामों से सैकड़ों स्त्री-पुरुष एकत्रित हुए थे। हीवरखेड़ के सेठ श्री शांतिजी बंड जैन ने भी उल्लासपूर्ण स्वागत भाषण देकर गुरुदेव का स्वागत किया था।

मुक्तागिरि से प्रस्थान करके पूज्य गुरुदेव परतवाड़ा ठहरे थे.... मुक्तागिरि में रात्रि को सुन्दर भक्ति हुई थी... सिद्धिधाम में साधक संतों के भाव इसप्रकार सहज ही उल्लसित हो रहे थे—

गुरुदेव साथे यात्रा आज.... वाह वा जी... वाह वाह!

सिद्ध प्रभुजी देख्या आज... वाह वा जी... वाह वाह!

सिद्ध प्रभु पासे आव्या आज... वाह वा जी... वाह वाह!

सिद्धपद ने पाया आज... वाह वा जी... वाह वाह!

—ऐसी उल्लास भरी भक्ति हुई थी और पूज्य बेन श्री बेन अपना यात्रा सम्बन्धी उल्लास एवं भावना व्यक्त करते हुये कहती थीं—

आज हम मुनिराज तुम्हारे पास आये...

आज हम सिद्धप्रभु तुम्हारे पास आये...

अमरावती होकर नागपुर की ओर

चैत्र कृष्ण १३ के प्रातःकाल सिद्धिधाम के दर्शन करके संघ ने अमरावती की ओर प्रस्थान किया... मार्ग में गुरुदेव भातकुली ग्राम पधारे और वहाँ आदिनाथ स्वामी इत्यादि प्राचीन जिनबिम्बों के दर्शन किये। अमरावती में दि० जैन समाज तथा गुजराती भाइयों ने गुरुदेव का हार्दिक स्वागत किया था। वहाँ पाँच जिन मन्दिर हैं। यहाँ गुरुदेव के प्रवचन में असाधारण बड़ी जन संख्या थी जो बड़े चाव से सुनती थी। मन्दिरों के दर्शन तथा भोजनादि के पश्चात् संघ ने नागपुर की ओर प्रस्थान किया...

लम्बी यात्रा में पूज्य बेन श्री बेन कभी-कभी यात्रियों की बस में बैठकर आत्मस्पर्शी भक्ति कराती थीं... भक्ति करते हुए यात्रियों को पता भी नहीं चलता था कि इतनी लम्बी यात्रा कब समाप्त हो गई! पूज्य बेन श्री बेन सब बालकों को आनन्द कराती थीं....

“पूज्य श्री कानजी स्वामी दि० जैन तीर्थयात्रा संघ” अमरावती से नागपुर की ओर जा रहा था... पूज्य बेन श्री बेन भी साथ थीं... विविध प्रकार के भक्तिनाद से गूँजती हुई मोटर-बसें दौड़ रही थीं.... किन्तु मार्ग में एक छोटा ग्राम—‘बाजार गाँव आते ही रात को नौ बजे सभी बसें यकायक रुक गईं.... किसलिये ?

— यह अगले लेख में देखिये।

‘पूज्य श्री कानजी स्वामी दिगम्बर जैन तीर्थयात्रा संघ’ ने अमरावती से नागपुर की ओर प्रस्थान किया;—यहाँ तक का यात्रा-वर्णन पहले में आ गया है। अब उससे आगे का वर्णन दिया जा रहा है। पूज्य गुरुदेव की मंगलकारी यात्रा तथा उसके संस्मरण तीर्थ के और तीर्थ स्वरूप सन्तों के प्रति भव्य जीवों की भक्ति में वृद्धि करके रत्नत्रयात्मक तीर्थ में प्रवृत्ति करायें!—ऐसी भावना है।

— ब्र० हरिलाल जैन

‘पूज्य श्री कानजी स्वामी दिगम्बर जैन तीर्थयात्रा संघ’ अमरावती से नागपुर की ओर जा रहा है... बजारगाँव आते ही सब मोटर बसें रुक गई... किसलिये ? श्री जिनेन्द्रदेव के दर्शनार्थ। बजारगाँव में एक विशाल प्राचीन जिनमन्दिर है; जिसमें नौ वेदिकाओं पर अनेक जिनेन्द्र भगवन्त विराजमान हैं... मूलनायक के रूप में श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की भव्य प्रतिमा विराजमान हैं... वह मन्दिर जंगल में मंगल के समान शोभा दे रहा है... रात्रि को नौ बजे पूज्य बेन श्री बेन के साथ संघ ने उत्साह तथा भक्तिपूर्वक भगवान के दर्शन किये... मानों छोटे-से तीर्थ की यात्रा हुई.. जब गुरुदेव वहाँ से निकले, तब वे भी उस जिनमन्दिर के दर्शन करके प्रसन्न हुए थे... रात्रि को संघ नागपुर पहुँचा।

नागपुर (चैत्र कृष्णा १४-१५, ता० ६-७ अप्रैल)

प्रातः काल जिनेन्द्र भगवान के दर्शन-पूजन करके भक्तजन गुरुदेव के स्वागतार्थ तैयार हो गये... साढ़े आठ बजे गुरुदेव का आगमन होते ही नागपुर के हजारों नागरिकों ने उनका भव्य स्वागत किया... चाँदी के दो रथ, बेन्ड बाजा तथा छड़ी चँवरादि के साथ स्वागत-जुलूस निकला गुरुदेव सजी हुई मोटर में बैठे थे... जगह-जगह मकानों से पुष्पवृष्टि हो रही थी। स्वागत के पश्चात् मंगल-प्रवचन हुआ। नागपुर में १३ जिन मन्दिर हैं। दोपहर के समय भक्तों ने गुरुदेव के साथ आनन्द सहित ११ जिनमन्दिरों की वन्दना की और दो से तीन बजे तक गुरुदेव का स्वागत-समारोह हुआ। संघ दो दिन तक नागपुर ठहरा था। दूसरे दिन प्रातः काल दो मन्दिरों के दर्शन किये। एक चैत्यालय में काँच की सुन्दर कारीगरी है।

डोंगरगढ़-खैरागढ़—

चैत्र शुक्ला एकम के दिन संघ नागपुर से डोंगरगढ़ पहुँचा। सेठ श्री भागचन्द्रजी साहब के

विशेष आग्रह से वहाँ का प्रोग्राम रखा था... गुरुदेव के आते ही भव्य स्वागत हुआ... दोपहर को अभिनन्दन-समारोह में सेठ श्री भागचन्द्रजी ने गुरुदेव के प्रति अत्यन्त भक्तिभाव व्यक्त किया था। संघ ने जिनमन्दिर में प्राचीन प्रतिमाओं के दर्शन किये और भोजन तथा प्रवचन के बाद खैरागढ़ की ओर प्रस्थान किया। खैरागढ़ पधारने पर पूज्य गुरुदेव का उल्लासपूर्ण भव्य स्वागत हुआ... वेदी-प्रतिष्ठा-महोत्सव के मंगल प्रारम्भरूप में गुरुदेव के शुभहस्त से जब ध्वजारोहण हुआ, तब भक्तों के हृदय हर्षोल्लास से भर गये थे। रात्रि को प्रतिष्ठा मण्डप में शान्तिनाथ भगवान के सन्मुख भक्ति हुई थी।

दूसरी चैत्र शुक्ला एकम के प्रातःकाल वेदी-प्रतिष्ठा सम्बन्धी विधियाँ (मंत्र जाप, इन्द्र प्रतिष्ठा, यागमण्डल विधान, वेदी शुद्धि आदि) हुई थीं। गुरुदेव के प्रवचन के पश्चात् दो कुमारिकाओं ने आजन्म ब्रह्मचर्य-प्रतिज्ञा अंगीकार की थी। वहाँ उभय-खेमराजजी ने उत्साहपूर्वक नवीन दिगम्बर जिनमन्दिर का निर्माण कराया है; उसमें गुरुदेव के शुभहस्त से शान्तिनाथ भगवान की प्रतिष्ठा हुई। दोपहर को अभिनन्दन-समारोह तथा प्रवचन के बाद जिनेन्द्रदेव की भव्य रथयात्रा का जुलूस निकला था। दूर-दूर के लोग बैल गाड़ियाँ लेकर आये थे। सायंकाल पाँच बजे मारवाड़ी पद्धति से संघ को विदा करने का दृश्य भावभीना था। संघ ने रामटेक की ओर प्रस्थान किया।

आज रात भर प्रवास करना था। पूज्य बेन श्री बेन यात्रियों की बस में साथ होने से सबको बड़ा हर्ष हो रहा था... रात भर विविध प्रकार की भक्ति का कार्यक्रम चलता रहा... पूज्य बेन श्री बेन ने अध्यात्म रस भरी आत्मस्पर्शी भक्ति द्वारा भक्तों को अध्यात्म भावना में झुलाया था। भक्ति का वह एक विशिष्ट अवसर था... मानों अंतर में आत्मपरिणति ही बोल रही थीं!—इसप्रकार रातभर भक्ति तथा अंताक्षरी करते-करते यात्रीगण प्रातःकाल पाँच बजे रामटेक पहुँचे और धर्मशाला ढूँढ़ते-ढूँढ़ते सवेरा हो गया। भक्त कह रहे थे कि आज यात्रा के निमित्त से जागरण हुआ।

रामटेक (चैत्र शुक्ला दूज)

रात भर जागे हुए भक्तों ने प्रातःकाल स्नानादि के पश्चात् शान्तिनाथ भगवान के दर्शन-पूजन किये। उसी समय गुरुदेव की मोटर आ पहुँची... सबने मिलकर गुरुदेव का हार्दिक स्वागत किया और उनके साथ जिनमन्दिरों की वन्दना की। वहाँ धर्मशाला के विशाल प्रांगण में ९ जिन मन्दिर तथा २१ वेदिकाएँ हैं। मध्यवर्ती मुख्य मन्दिर में श्री शान्तिनाथ भगवान की १६ फीट ऊँची भव्य प्रतिमा है तथा आसपास भी उन्हीं भगवान की पाँच-पाँच फीट ऊँची प्रतिमाएँ विराजमान हैं। एक मन्दिर की रचना तो समवसरण जैसी है... तीन पीठिकाओं के ऊपर चन्द्रप्रभ भगवान

विराजमान हैं... मानस्तम्भ भी है। सोलह फीट ऊँचे सोलहवें तीर्थकर श्री शान्तिनाथ भगवान के सन्मुख आते ही भक्तों के हृदय में मानों शांति की धारा बहने लगती है। दोपहर को समूह पूजन तथा भक्ति हुई थी... तत्पश्चात् प्रवचन और रात्रि को तत्त्वचर्चा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सिवनी (चैत्र शुक्ला ३, ता० ११-४-५९)

दूसरे दिन प्रातःकाल संघ ने रामटेक से सिवनी की ओर प्रस्थान किया। सिवनी में दो जिनमन्दिर हैं। बड़े मन्दिर में अठारह वेदियाँ हैं। दूसरे मन्दिर के बीचोंबीच पंचमेरु की रचना है तथा चारों कोनों पर चार वेदियाँ हैं। स्वागत के पश्चात् गुरुदेव का प्रवचन हुआ... दोपहर को मन्दिर में समूह पूजन तथा भक्ति हुई थी। सौराष्ट्र के यात्रियों ने उल्लासपूर्वक सौराष्ट्रवासी भगवान नेमिनाथ की पूजा-भक्ति की, और फिर गुरुदेव ने भावभीनी भक्ति कराई:—

“मारा नेम पिया गिरनारी चाल्या, मत कोई रोक लगाजो...

लार लार संयम अम लेशुं, मत कोई प्रीत बढाजो...”

सिवनी से चलकर सायंकाल छपारा पहुँचे... वहाँ के विशाल जिनमन्दिर में छह वेदियों के तथा गंधकुटी के दर्शन किये और भोजन के पश्चात् संघ जबलपुर पहुँच गया। गुरुदेव रात्रि को सिवनी रुक गये थे; वहाँ पंडित सुमेरचन्दजी दिवाकर आदि विद्वानों के साथ सुन्दर तत्त्वचर्चा हुई थी... गुरुदेव के समागम से पं० सुमेरचन्दजी तथा श्री रतनलालजी आदि को खूब हर्ष हुआ था। अपने भावपूर्ण भाषण में उन्होंने कहा कि—‘स्वामीजी के विषय में अनेक बातें सुनी थी, उनके निकट परिचय से भ्रम दूर हुआ।’

जबलपुर (चैत्र शुक्ला ४-५, ता० १२-१३ अप्रैल)

सबेरे नौ बजे गुरुदेव का जबलपुर आगमन होते ही वहाँ के जैन समाज ने अत्यन्त सादगीपूर्ण भव्य स्वागत किया। जबलपुर का जैन समाज अत्यन्त उत्साही तथा वैभव सम्पन्न है। उनकी भावना थी कि गुरुदेव स्वागत बड़ी धूमधाम से किया जाये; किन्तु उन्हीं दिनों कुछ दुष्ट जीवों ने वहाँ एक जिनमन्दिर की प्रतिमाएँ खण्डित कर दी थीं जिससे सारे समाज में शोक छाया हुआ था। उन्होंने अध्यात्मगीत गाते-गाते शान्तिपूर्वक सादगी से गुरुदेव का स्वागत किया। खण्डित प्रतिमाओं को देखकर भक्तों का हृदय गदगद हो जाता था... मन्दिर में चारों ओर बिखरे पड़े हुए काँच से टुकड़ों से भी मानो वीतरागता की ध्वनि उठ रही थी। अनेक प्रतिष्ठित अजैन बन्धु भी गुरुदेव के स्वागत में सम्मिलित हुए थे। प्रवचन-मण्डप पाँच-छह हजार स्त्री-पुरुषों से

खचाखच भर गया था। एडीशनल डिस्ट्रिक जज श्री फूलचन्दजी साहब ने स्वागत प्रवचन करते हुए कहा—मैं सोनगढ़ हो आया हूँ; गत वर्ष शिखर सम्मेद भी स्वामीजी के पास गया था। सोनगढ़ से प्रकाशित पिछले दस वर्ष के साहित्य का मैंने सूक्ष्मता से अध्ययन किया है। मैं अपने अनुभव और अधिकार पूर्वक कह सकता हूँ कि आज भारत के दार्शनिकों में जैन दर्शन के सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक श्री कानजी स्वामी हैं। आपने अपनी विशिष्ट शैली से श्री समयसार आदि परमागमों का रहस्य समझाया है। स्वामीजी के द्वारा जैन दर्शन की महान सेवा हुई है, इसलिये जैन समाज के प्रति आपका महान उपकार है। मैं किन शब्दों में आपको श्रद्धांजलि अर्पित करूँ! मैं भारत के अनेक पण्डितों के सम्पर्क में आया हूँ; किन्तु मेरे आत्मा में स्वामीजी का गहरा तात्त्विक प्रभाव है। अभी प्रवचन सुनने के पश्चात् आपको भी इस बात का अनुभव हो जायेगा। मैं स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ... हमारे यहाँ एक ऐसी दुःख घटना हो गई है; जिससे हम आपका पूरी तरह स्वागत नहीं कर सके। टूटा-फूटा स्वागत करके मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ।

पश्चात् गुरुदेव का प्रवचन हुआ और दोपहर की भक्ति का कार्यक्रम घोषित करते हुए श्री फूलचन्दजी साहब ने कहा—दोपहर के समय हमारे यहाँ पधारी हुई सोनगढ़ की दो पवित्र बहिनें (बेन श्री बेन) तन्मयता से ऐसी भक्ति करायेंगी जो वर्षों तक आप लोगों को याद रहेगी।

भिन्न-भिन्न गृहस्थों ने संघ के यात्रियों को भोजन के लिये आमन्त्रित किया था और वहाँ की रीति के अनुसार चन्दन तथा पुष्प हारों से स्वागत किया था।

जबलपुर में तेरह विशाल जिनमन्दिर हैं; प्रत्येक मन्दिर में स्वाध्याय और सामायिक के लिये विशेष स्थान हैं; जिन्हें देखकर 'सामायिक वाले जी....' आदि पूजा का स्मरण होता था। एक जिनमन्दिर में आठ वेदियाँ हैं; वहाँ दोपहर के समय पूज्य बेन श्री बेन ने अद्भुत भक्ति कराई थी... मन्दिर स्त्री-पुरुषों से खचाखच भर गया था; हजारों आदमी मण्डप में बैठकर सुन रहे थे... पूज्य बेन श्री बेन की अद्भुत भक्ति देखकर सब मुग्ध हो गये थे।

तालाब के किनारे विशाल पंचायती मन्दिर है जिसमें बाईस वेदियों पर जिनबिम्ब समूह विराजमान है। जगह-जगह खास-सामाजिक और स्वाध्याय के स्थान हैं। पूज्य गुरुदेव के साथ ऐसे विशाल जिनालयों के दर्शन करते हुए भक्तों को हर्ष हो रहा था। इतना विशाल मन्दिर है कि दर्शन करने में करीब एक घण्टे का समय लग जाता है।

गुरुदेव का प्रवचन बाजार में बनाये गये भव्य मंडप में होता था। मंडप के अतिरिक्त

आसपास की दुकानें भी श्रोताओं से भर जाती थीं। करीब छह-सात हजार स्त्री-पुरुष प्रवचन सुनने के लिये आते थे। सारे बाजार का वातावरण धर्मसभा के रूप में बदल गया था।

मढियाजी (चैत्र शुक्ला ४, ता० १२-४-५९)

ता० १२, संघ जबलपुर से पाँच मील दूर मढियाजी क्षेत्र के दर्शनार्थ गया था। वहाँ तीन सौ फुट ऊँचे छोटे-से पहाड़ पर अनेक जिनमन्दिरों की सुन्दर रचना है। बीचों बीच श्री बाहुबलि भगवान की ९ फुट ऊँची प्रतिमा है। उनके एक ओर श्री महावीरस्वामी की भाववाही ध्यानस्थ प्रतिमा है तथा दूसरी ओर श्री आदिनाथ भगवान की मुद्रा देखते ही बनती है। मन्दिर के प्रांगण में चारों ओर २४ भगवन्तों की (उन-उन भगवन्तों के वर्णवाली) भव्य प्रतिमाएँ हैं; जिनसे पर्वत का वातावरण और भी आकर्षक बन गया है। एक मन्दिर में कमलासन पर जिनेन्द्र भगवान शोभा दे रहे हैं। दूसरे दो मन्दिर तथा मनोहर गुफाएँ भी हैं। एक गुफा में मुनिवरों के चित्र हैं और दूसरी में छोटे-छोटे जिनबिम्ब मुमुक्षुओं को आत्मध्यान की प्रेरणा दे रहे हैं। 'पिसनहारी' के मन्दिर में दो छोटे-छोटे जिनबिम्ब तथा श्री गौतम-गणधर की चरणपादुका हैं। तलहटी के मन्दिर में श्री महावीरस्वामी की प्रतिमा तथा मानस्तम्भ भी है। भक्तों ने हर्षपूर्वक बाहुबलि भगवान के सम्मुख भक्ति की थी—

(१) जय बाहुबलि जय बाहुबलि जय बाहुबलि देवा...

माता तोरी सुनन्दा ने पिता ऋषभ देवा....

(२) धन्य बाहुबलि आतमहित में छोड़ दिया परिवार,....

कि तुमने छोड़ा सब संसार....

वहाँ अनेक मन्दिरों तथा चौबीस भगवन्तों के दर्शन से भक्तों को अत्यन्त हर्ष हुआ। गुरुदेव के साथ एक अतिशय क्षेत्र की यात्रा हुई... भक्तों को बारम्बार भक्ति करने का मन हो रहा था, इसलिये निम्नोक्त उल्लास भरी भक्ति कराई थी—

आज हम जिनराज तुम्हारे द्वारे आये... हाँ जी हाँ हम आये आये...

चौबीस प्रभु के द्वारे आये... जबलपुर की यात्रा आये...

चौबीस प्रभु के द्वारे आये... गुरुजी के साथ में आये...

इत्यादि प्रकार से गुरुदेव के साथ होनेवाली यात्रा का उल्लास भक्ति द्वारा व्यक्त किया और जय जयकार करते हुए जबलपुर लौटे।

भेड़ाघाट के प्राकृतिक दृश्य

ता० १३ के प्रातः काल भेड़ाघाट देखने गये... वहाँ एक प्राचीन जिनमन्दिर है और आसपास संगमरमर के पहाड़ तथा झरने का प्राकृतिक सौन्दर्य दर्शनीय है। संगमरमर की विशाल चट्टानों में होकर पानी के झरने बह रहे हैं... सौ फीट की ऊँचाई से पानी गिरता है।

प्रातःकाल गुरुदेव के प्रवचन के बाद 'सन्मति-सन्देश' पत्र के सम्पादक श्री प्रकाशचन्द्र भारिल्ल ने सपत्नीक आजन्म-ब्रह्मचर्य प्रतिज्ञा अंगीकार की थी... गुरुदेव के समक्ष ब्रह्मचर्य-प्रतिज्ञा लेते समय उनकी आँखों से आँसू गिर रहे थे। तत्पश्चात् सेठ हुकुमचन्दजी (महावीर सायकल मार्ट वालों) ने गुरुदेव के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि—हमारे लिये बड़े सौभाग्य की बात है कि पूज्य श्री कानजी स्वामी यहाँ पधारे हैं। स्वामीजी ने हमें चैतन्यतत्त्व के चिंतन का वह मार्ग बतलाया है जो आजतक नहीं मिला था। स्वामीजी के प्रवचन से यहाँ की जनता को यथार्थ वस्तु-स्वरूप समझने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। भारत वर्ष के संतों ने समाज के समक्ष यही आध्यात्मिक बात रखी है। सौराष्ट्र के महान सन्त श्री कानजी स्वामी के प्रताप से सोनगढ़ महान आध्यात्मिक स्थान बन गया है। मैं स्वयं वहाँ गया था; मुझे वहाँ जो शान्ति प्राप्त हुई उसका वर्णन करना मेरी शक्ति से बाहर है। उनके प्रवचन की मैं क्या बात कहूँ!—अपने नगर में स्वामीजी का अभिनन्दन करते हुए हमें हर्ष हो रहा है। उसके बाद जबलपुर महिला समाज की ओर से श्रीमती सुन्दरी बहिन ने तथा रूपवती बहिन ने भी काव्यरूप में श्रद्धांजलि अर्पित की थी। फिर श्री हुकुमचन्दजी 'अनिल' ने भी श्रद्धांजलि-गीत गाया था... तत्पश्चात् जबलपुर दि० जैन समाज की ओर से अभिनन्दन-पत्र भेंट किया गया था।

दोपहर के समय पूज्य गुरुदेव के निवास स्थान पर तत्त्व-चर्चा का कार्यक्रम था। उस समय जबलपुर के अनेक विद्वान तथा सद्गृहस्थ उपस्थित थे। चर्चा के पश्चात् भक्ति और फिर प्रवचन का कार्यक्रम था। भोजन के पश्चात् पनागर जिन मन्दिर के दर्शन करने गये थे। इसप्रकार जबलपुर का दो दिन का कार्यक्रम सानन्द समाप्त हुआ। जबलपुर की जैन जनता धार्मिक कार्यों में रुचिपूर्वक भाग लेती है और उसे स्वाध्याय एवं तत्त्वचर्चा से प्रेम है।

पनागर में जिनेन्द्र दर्शन और स्वागत

सायंकाल छह बजे गुरुदेव पनागर पधारे और वहाँ के समाज ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया। पनागर जबलपुर से दस मील दूर है; वहाँ पाँच जिन मन्दिर हैं। एक मन्दिर में श्री शान्तिनाथ

भगवान की करीब दस फीट ऊँची प्राचीन प्रतिमा है; उस उपशान्त जिन प्रतिमा के दर्शन से गुरुदेव और भक्तजनों को अपार हर्ष हुआ था। अहा! उस उपशान्त चैतन्य मुद्रा के अवलोकन से चित्त में आत्मिक शान्ति का स्रोत बहने लगता है... संसार से थके हुए जीव उन शान्तिनाथ प्रभु के चरणों में शान्ति प्राप्त करते हैं। तदुपरान्त वहाँ दूसरे अनेक जिनबिम्ब विराजमान हैं। एक मन्दिर के ऊपरी भाग में श्री सम्मोदशिखर तीर्थधाम की अत्यन्त भव्य एवं विशाल रचना है। वहाँ लगभग दो सौ यात्रियों ने बैँड बाजे के साथ भक्तिपूर्वक दर्शन किये थे। गुरुदेव ने भी भक्तों से कहा था कि यहाँ की प्रतिमाजी दर्शनीय हैं। जिनेन्द्र भगवान के दर्शन - भक्ति के पश्चात् पनागर जैन-समाज ने गुरुदेव को तथा यात्रा संघ को भी अभिनन्दन पत्र भेंट किया था... फिर यात्रा-संघ के प्रत्येक यात्री का पुष्पहार पहिनाकर तथा मेवा देकर सम्मान किया था। इसप्रकार पनागर जैन समाज ने अत्यन्त वात्सल्यभाव प्रदर्शित किया था। इस शैली से साधर्मियों के मिलन एवं वात्सल्य का भावभीना दृश्य देखकर सब आनन्द विभोर हो रहे थे। संघ की विदाई का समारोह भी दर्शनीय था।

दमोह (चैत्र शुक्ला ६, ता० १४-४-५९)

जबलपुर से गुरुदेव दमोह पधारे और वहाँ के समाज ने भव्य स्वागत किया। दोपहर को प्रवचन में करीब तीन हजार आदमी उपस्थित थे; आसपास के ग्रामों में सैकड़ों व्यक्ति गुरुदेव के दर्शनार्थ आये थे। प्रवचन के समय धर्मशाला ऊपर और नीचे खचाखच भर गई थी, इसलिये बाहर सड़क पर भी लोगों की भीड़ लगी थी। धर्मशाला के कमरे भी श्रोताओं से भर गये थे। दमोह में करीब नौ जिनमन्दिर हैं; गुरुदेव के साथ भक्तों ने उनकी वन्दना की। समाज की ओर से संघ के भोजनादि की सुन्दर व्यवस्था हुई थी। सायंकाल संघ ने दमोह से कुंडलपुर की ओर प्रस्थान किया।

कुंडलपुर सिद्धक्षेत्र

दूर-दूर से कुंडलपुर का सुन्दर दृश्य दिखाई दे रहा था। चारों ओर से प्रकाशित गोलाकार पर्वत भक्तों के चित्त को आकर्षित कर रहा था... पर्वत के ऊपर अनेक उज्ज्वल जिनमन्दिरों की शिखरमाला इसप्रकार शोभायमान हो रही है जैसे पर्वत को मन्दिरों की माला पहिना दी हो! कुंडलगिरि सिद्धक्षेत्र से श्रीधर-स्वामी ने—जो कि अन्तिम केवलज्ञानी हुए हैं—मोक्ष प्राप्त किया है। कुंडलाकार पर्वत पर ४६ तथा नीचे और धर्मशाला में १० जिनमन्दिर हैं। पर्वत के मुख्य मन्दिर में श्री महावीरस्वामी की १२ फीट ऊँची पद्मासन प्रतिमा विराजमान है जो 'बड़े बाबा' के नाम से प्रसिद्ध हैं। क्षेत्र के बीचोंबीच वर्द्धमान सागर नाम का विशाल सरोवर है। गुरुदेव के साथ ऐसे

सुन्दर सिद्धक्षेत्र पर आये हुए यात्रियों के हर्ष का पार न था। रात्रि-चर्चा के समय गुरुदेव ने यात्रा के मधुर संस्मरण कहकर भक्तों को प्रफुल्लित कर दिया था।

कुंडलपुर सिद्धिधाम की यात्रा (चैत्र शुक्ला, ७)

गुरुदेव के साथ सिद्धिधाम की यात्रा के लिये भक्तजन इतने आतुर थे कि प्रातःकाल चार बजते ही सब तैयार हो गये। पहले नीचे के कुछ जिनमन्दिरों की वन्दना की। प्रतिदिन नये-नये जिनेन्द्र समूह के दर्शनों का उल्लास व्यक्त करते हुए गुरुदेव ने कहा था कि—‘अहा! जगह-जगह जिनेन्द्रों का दरबार लगा है!’ यात्रा में हजारों नहीं किन्तु लाखों जिनेन्द्र भगवन्तों के दर्शन हुए... कहीं-कहीं तो एक ही मन्दिर में हजारों प्रतिमाओं के दर्शन होते थे।

प्रातःकाल पाँच बजे गुरुदेव के साथ सिद्धक्षेत्र की यात्रा प्रारम्भ हुई। श्रीधरस्वामी आदि का जय जयकार करते हुए दो-तीन मिनट चलने पर तालाब के किनारे ही पर्वत की चढ़ाई प्रारम्भ हुई... यात्रा में पग-पग पर जिनेन्द्र भगवन्तों के दर्शन होने से भक्तों को अत्यन्त हर्ष होता था... गुरुदेव भी प्रमोदपूर्वक भक्तों से कहते थे कि यह तो भगवान का दरबार है... यात्रा में लाखों जिनेन्द्र भगवन्तों के दर्शन हुए हैं। दो मन्दिरों के बाद तीसरे में **श्रीधर स्वामी की चरण पादुका थीं।** क्रमशः दर्शन करते हुए १९ वें मन्दिर में आये... इसी मन्दिर में ‘कुंडलपुर के बड़े बाबा’ विराजमान हैं। भगवान महावीर की १२ फीट ऊँची मनोज्ञ प्रतिमा को देखते ही भक्तों का मस्तक भक्तिभार से झुक जाता है। भोंयरे में महावीर स्वामी के अतिरिक्त दीवारों पर अनेक प्राचीन जिनबिम्ब हैं। वहाँ संघ ने समूह पूजन की और अत्यन्त भाव से दर्शन-पूजन करके दूसरे मन्दिरों की वन्दना के लिये आगे बढ़े। वहाँ कुंडलाकार पर्वतमाला होने से मन्दिरों की वन्दना के साथ-साथ प्रदक्षिणा भी होती जाती है।

आज मारा हृदयमां आनन्द सागर उल्लसे...

जिन दरबार ना दर्शन वडे संसार ताप सहु टले...

गुरुदेव साथे यात्रा करतां संताप सहेजे टले...

यात्रा के समय उपरोक्तानुसार विविध मंगल गीत गाते हुए पूज्य बेन श्री बेन यात्रा के उल्लास में वृद्धि कर रही थीं। इसप्रकार गुरुदेव के साथ अत्यन्त भाव-पूर्वक पर्वत के ४६ जिनमन्दिरों की यात्रा हुई... अन्त में तालाब के किनारे स्थित जिनमन्दिर के दर्शन किये और स्तुति गान करते हुए यात्री धर्मशाला में पहुँचे।

दोपहर को जिनमन्दिर में समूह पूजन का कार्यक्रम था। आदिनाथ भगवान तथा सिद्ध भगवान की पूजा के पश्चात् सोलहकारणभावना की पूजा हुई थी; क्योंकि वे सोलहकारणभावना तथा दशलक्षण पर्व के दिन थे। पूजन के पश्चात् बेन श्री बेन ने उल्लास पूर्ण भक्ति कराई थी—

“मैं परम दिगम्बर साधु को नित ध्याऊँ रे.....”

दोपहर को प्रवचन के समय तीर्थ प्रबन्धक कमेटी की ओर से गुरुदेव का अभिनन्दन तथा आभार प्रदर्शन किया गया था.... रात्रि को तत्त्वचर्चा हुई थी... आसपास के ग्रामों से सैंकड़ों लोग गुरुदेव के दर्शनार्थ आये थे।

**कुंडलपुर सिद्धिधाम की यात्रा करानेवाले
कहान गुरुदेव की जय हो!**

[शेष अगले अंक में]



आवश्यक कार्य

मोक्षार्थी जीव के लिये आवश्यक कार्य अर्थात् निश्चितरूप से करनेयोग्य कार्य क्या है कि जिससे मुक्ति हो?—वह यहाँ बतलाते हैं। अन्तर्मुख होकर अपने शुद्ध आत्मा के वश होना—स्ववश होना और अन्य के वश न होना—ऐसा कर्तव्य मोक्षार्थी योगियों के लिये आवश्यक होता है और वही अशरीरी—सिद्ध होने का उपाय है।

अन्तर्मुख होना ही धर्मी जीव का आवश्यक कर्तव्य है। अन्तर्मुख होने का मतलब क्या?—तो कहते हैं कि—उपयोग की बाह्य पदार्थों के साथ संलग्नता को तोड़ना और अंतरस्वभाव में सलग्न होना, उसका नाम ‘अन्तर्मुख’ है; उसमें स्ववशता होने से स्वतंत्रता है और परवशता का अभाव है। इसलिये स्वतंत्रता के इच्छुक अर्थात् मोक्षार्थी को ऐसी स्ववशता ही आवश्यक कर्तव्य है; उसके द्वारा मोक्ष की प्राप्ति होती है। बीच में राग आ जाये, वह आवश्यक कर्तव्य नहीं है, वह मोक्ष का उपाय नहीं है।

जो जीव, राग को कर्तव्य माने अथवा उसे मोक्ष का साधन माने तो वह अपने आवश्यक कार्य को अर्थात् मोक्षमार्ग को भूल जाता है। मोक्ष के लिये आवश्यक कार्य तो आत्मा के ही आश्रय से होता है; राग के आश्रय से नहीं होता। राग तो बन्ध का कारण है, वह मोक्ष का कारण नहीं है; तो फिर वह मोक्षार्थी का कर्तव्य कैसे हो सकता है? अज्ञानी उसे कर्तव्य मानते हैं, वह उनका भ्रम है।

मोक्षार्थी जीव का आवश्यक कार्य कहो, सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र कहो, अन्तर्मुखपना कहो, स्ववशपना कहो, अवश (अर्थात् अन्य के वश नहीं) —ऐसा कहो, निश्चय धर्मध्यान कहो या परम आवश्यक कर्म कहो, वही मोक्षमार्ग है, वही अशरीरी होने की युक्ति है, वही मोक्ष का उपाय है। धर्मी जीव ऐसे कार्य द्वारा मुक्ति प्राप्त करता है। यही मुक्ति की युक्ति है।

परवश ऐसे रागादि भाव तो परवश होने का कारण है अर्थात् उनसे तो कर्म-बन्धन होता है और शरीर की प्राप्ति होती है, उनसे कहीं अशरीरी नहीं हुआ जाता। स्ववश ऐसा जो शुद्ध रत्नत्रयभाव है, वह कर्मबन्धन को तोड़कर अशरीरी सिद्ध होने का उपाय है। जिन्हें मोक्ष प्राप्त करना हो, सिद्ध होना हो—ऐसे मुमुक्षु जीवों को तो यही अवश्य करने योग्य कार्य है; अर्थात् अन्तर्मुख होकर आत्मा के आश्रय से सम्यक्-श्रद्धा, ज्ञान एवं एकाग्रता करने योग्य है, उसके द्वारा नियम से मुक्ति होती है और वही नियम से कर्तव्य है। निश्चयरत्नत्रय द्वारा ही नियम से मुक्ति प्राप्त होती है; इसलिये मोक्ष के लिये वही नियम से कर्तव्य है और वही मोक्षार्थी जीवों का आवश्यक कार्य है।

(—नियमसार, गाथा १४२ के प्रवचन से)



जिज्ञासुओं के लिये स्वर्णावसर

आसोज सुद १५ तक के लिये कुछ ग्रन्थों के मूल्य में कमी

१ — लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका

जो तत्त्वज्ञान में प्रवेश पाने के लिये गाइड (-मार्ग दर्शिका) है, जैन तत्त्वज्ञान में सुगय शैली द्वारा प्रवेश पाने के लिये शास्त्राधार सहित रोचक, स्पष्ट और प्रयोजनभूत प्रश्नोत्तर है, जैन-जैनेतर सभी में प्रचार होने योग्य है। मूल्य -०-१९ नये पैसे। एकसाथ २५ बुक में १२ ॥) टका कमीशन, और १०० बुक पर २५) टका कमीशन देंगे।

२ — श्री समयसार प्रवचन भाग ३, हिन्दी - ४ ॥) वाला अर्ध मूल्य में

३ — भेदविज्ञानसार " २) " " "

४ — श्री जैन तीर्थक्षेत्र पूजा पाठ संग्रह (बड़ा)

जो भक्तिपूजा और तीर्थयात्रा के समय जिनेन्द्रों की बड़ी-बड़ी पूजा के लिये तथा प्रत्येक जिनमंदिर के लिये उपयोगी है। जिसमें प्रायः देशभर के सब जैन तीर्थक्षेत्र तथा अतिशय क्षेत्रों में जो प्राचीन पूजायें चल रही हैं वे हैं। और यात्रियों के लिये तीर्थक्षेत्रों के विषय में प्रयोजनभूत जानकारी, कहाँ से कहाँ कैसे जाना इत्यादि वर्णन है। बहुत अच्छे कागज पर सुन्दर ढंग से बड़े टाइप में छपी है, बढ़िया कपड़े की जिल्द, पत्र सं० ३००, मूल्य १-४५- पोस्टेजादि अलग। १० पुस्तक एक साथ लेने पर २५) प्रतिशत कमीशन, और एक ग्रन्थ में दस टका कमीशन।



सच्चे सुख के लिये सीधा मार्ग (-यथार्थ उपाय)
प्रकाशनेवाले
तत्त्वज्ञान के लिये सुरुचिपूर्ण ग्रन्थ

१. सम्यग्दर्शन—(-दूसरी आवृत्ति)

धर्म का मूल सम्यग्दर्शन है। जो अपना असली स्वरूप-स्वाधीनसुख और उसका सच्चा उपाय समझने में स्वच्छ दर्पण समान है, इस बात को अच्छे ढंग से शास्त्राधार सहित बताया है। जैन धर्म में ही सच्चा विश्व दर्शन क्यों है ?—सर्वज्ञ वीतराग कथित तत्त्वार्थों को वैज्ञानिक ढंग से सिद्ध करके स्वतंत्र वस्तुस्वभाव समझने की अनेक बात स्पष्ट करने में आई है। आद्योपांत पढ़े बिना उसका महत्व ख्याल में नहीं आता। पृष्ठ सं० २६६ मूल्य १.६३।

२. लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका—

जो गाइड है—जैन तत्त्वज्ञान में सुगम शैली द्वारा प्रवेश पाने के लिये शास्त्राधार सहित सुगम और प्रयोजनभूत प्रश्नोत्तर हैं, सभी में प्रचार होने योग्य है। थोक लेने पर कमीशन देंगे। पृष्ठ संख्या १०५ मूल्य ०.१९ नये पैसे।

३. श्री जैन तीर्थ पूजा पाठ संग्रह—

जो भक्ति पूजा और तीर्थयात्रा के समय जिनेन्द्रों की बड़ी-बड़ी पूजा के लिये उपयोगी पुस्तक है। जिसमें भारतवर्ष के प्रायः सब जैन तीर्थक्षेत्र तथा अतिशय क्षेत्रों में पूजा के समय जो प्राचीन पूजायें चल रही हैं, वे हैं, और यात्रियों के लिये तीर्थक्षेत्रों के विषय में प्रयोजनभूत जानकारी और कहाँ से कहाँ जाना-आना इत्यादि वर्णन तथा क्षेत्रों का परिचय होने से पुस्तक अति उपयोगी है। बहुत अच्छे कागज पर सुन्दर ढंग से बड़े टाइप में छपी है, बढ़िया कपड़े की जिल्द, पत्र सं० ३०० मूल्य १.४५। १० पुस्तक एक साथ लेने पर कमीशन देंगे।

४. जैन सिद्धान्त प्रश्नोत्तरमाला भाग १-२-३

जिसमें सर्वोत्तम शैली से शास्त्राधार सहित तत्त्वार्थों के विषय में ऐसा समाधान दिया है कि शास्त्रों का अर्थ नहीं समझनेवालों का भी सच्चा निःशंक समाधान हो सकता है और सभी को

उपयोग में आने योग्य है। पृ० सं० तीनों भाग की ४००, मूल्य प्रत्येक का ०.५६।

५. ज्ञानस्वभाव और ज्ञेयस्वभाव—

जो जैनधर्म का महत्वपूर्ण तात्त्विक और प्रयोजनभूत ग्रन्थ है। जो जिज्ञासुओं के लिये सर्व समाधानरूप अपूर्व वस्तुस्वभाव के ज्ञानमय तत्त्वदृष्टि प्रगट करनेवाली महान चीज है। इसके मुख्य विषय—

१- क्रमबद्धपर्याय के स्वरूप का विस्तारपूर्वक स्पष्टीकरण तथा उनमें दोष कल्पना का निराकरण है।

२- सम्यक् अनेकान्तगर्भित सम्यक् नियतवाद-जिसमें पुरुषार्थ, स्वभाव, काल, नियति और कर्म - ये पंच समवाय और क्रमबद्ध के निर्णय में स्वसन्मुख होने का सच्चा पुरुषार्थ तथा अनेकान्त है।

३- अनेकान्त, निमित्त उपादान, निश्चय-व्यवहार।

४- द्रव्य-पर्याय संबंधी अनेकान्त।

५- अनन्त पुरुषार्थ।

६- वस्तुविज्ञान अंक, जिसमें श्री प्रवचनसारजी गाथा ९९ के ऊपर पू० श्री कानजी स्वामी द्वारा प्रवचनों का सार है।

७- आत्मा कौन है और कैसे प्राप्त हो—इस विषय में प्रवचनसार शास्त्र में ४७ नयों द्वारा आत्मद्रव्य का वर्णन है। उस पर खास प्रवचनों का सार-[जिसमें नियतनय, और अनियतनय, कालनय, अकालनय से वर्णन है। बढिया जिल्द, सुन्दर कागज व आकर्षक बढिया टाइप में उत्तम छपाई है, पत्र सं० ४०० मूल्य २-५० नये पैसे। ५० पुस्तक लेने पर १० टका के हिसाब से कमीशन देंगे।]



नया प्रकाशन

मोक्षशास्त्र (तत्त्वार्थसूत्रजी) दूसरी आवृत्ति

छपकर तैयार हो गया है। तत्त्वज्ञान के जिज्ञासुओं द्वारा उसकी बहुत समय से जोरों से माँग है। जिसमें सर्वज्ञ वीतराग कथित तत्त्वार्थों का और सम्यग्दर्शन आदि का निरूपण सुगम और स्पष्ट शैली से किया गया है, सम्यक् अनेकान्तपूर्वक नयार्थ भी दिये हैं और जिज्ञासुओं के समझने के लिये विस्तृत प्रश्नोत्तर भी नय-प्रमाण द्वारा-सुसंगत शास्त्राधारसहित दिये गये हैं, अच्छी तरह संशोधित और कुछ प्रकरण में प्रयोजनभूत विवेचन बढ़ाया भी है, शास्त्र महत्वपूर्ण होने से तत्त्व प्रेमियों को यह ग्रन्थ अवश्य पढ़ने योग्य है, पत्र सं० ९०० करीब, मूल्य लागत मात्र ५), पोस्टेज आदि अलग। पचास ग्रन्थ मँगानेवालों को दस टका कमीशन; सौ पुस्तक में बीस टीका कमीशन और १० पुस्तक से कम मँगाने पर कमीशन नहीं देंगे।

पता:— श्री दि० जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट

सोनगढ़ (सौराष्ट्र)



श्री जैनधर्म शिक्षण-वर्ग

सोनगढ़ (सौराष्ट्र)

इस साल प्रौढो / विद्यार्थियों के लिये ता० ९-८-५९ से तारीख २८-८-५९ तक जैन धर्म शिक्षण-वर्ग चल रहा है। उनका लाभ लेने के इच्छुक जैन जिज्ञासुओं को आत्मारथी सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के दि० जैन धर्म के मूल सिद्धान्तों के रहस्यमय व्याख्यानों का लाभ भी मिलेगा। आनेवाले जिज्ञासुओं के लिये ठहरने की और भोजन की सुविधा ट्रस्ट के खर्च से होगी। इस वर्ग में सम्मिलित होने के इच्छुक भाई अपने आने की सूचना भेजकर समय पर उपस्थित हो जावें।

नीचे के पते पर पत्र देना।

श्री जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट

सोनगढ़ (सौराष्ट्र)

परमपूज्य श्री कानजी स्वामी के आध्यात्मिक वचनों का अपूर्व
लाभ लेने के लिये निम्नोक्त पुस्तकों का—

अवश्य स्वाध्याय करें

पंचास्तिकाय	४ ॥)	ज्ञानस्वभाव ज्ञेयस्वभाव	२ ॥)
मूल में भूल	॥१)	सम्यग्दर्शन	१ ॥=
श्री मुक्तिमार्ग	॥=)	द्वादशानुप्रेक्षा (स्वामि कार्तिकेयानुप्रेक्षा)	२)
श्री अनुभवप्रकाश	॥)	जैन तीर्थ पूजा पाठ संग्रह	
श्री पंचमेरु आदि पूजासंग्रह	॥१)	कपड़े की जिल्द	१ ॥=)
समयसार प्रवचन भाग २	५ १)	भेदविज्ञानसार	२)
समयसार प्रवचन भाग ३	४ ॥)	अध्यात्मपाठसंग्रह	५)
प्रवचनसार	५)	समयसार पद्यानुवाद	१)
अष्टपाहुड़	३)	निमित्तनैमित्तिक संबंध क्या है ?	=)
चिद्विलास	१=)	स्तोत्रत्रयी	॥)
आत्मावलोकन	१)	लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका	=)
मोक्षमार्ग-प्रकाशक की किरणें प्र०	१ ॥=)	'आत्मधर्म मासिक' लवाजम-	३)
द्वितीय भाग	२)	आत्मधर्म फाइलें १-३-५-६-	
जैन सिद्धांत प्रश्नोत्तरमाला प्र०	॥-)	७-८-१०-११-१२-१३ वर्ष	३ ॥१)
द्वितीय भाग	॥-)	शासन प्रभाव	=)
तृतीय भाग	॥-)		
जैन बालपोथी	१)		

[डाकव्यय अतिरिक्त]

मिलने का पता—
श्री जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट
सोनगढ़ (सौराष्ट्र)

मुद्रक—नेमीचन्द बाकलीवाल, कमल प्रिन्टर्स, मदनगंज (किशनगढ़)
प्रकाशक—श्री जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के लिये—नेमीचन्द बाकलीवाल ।